कहानी रह जाएगी

भक्त पूर्ण सिंह की



(1904-1992)

विषय सूची

मुद्रक:
पूर्ण प्रिंटिंग प्रेस, पिंगलवाड़ा मानांवाला कम्पलैक्स,
जी. टी. रोड, अमृतसर।
जून, 2014 को छपा, 20,000, कुल छपा 1,30,000
फोन नं. 0183-2584586, 2584713, फैक्स नं. 0183-2584516
E-Mail: Pingal@jla. vsnl.net.in
Website: www.pingalwaraonline.org

दो शब्द

(यह किताबचा भगत पूर्ण सिंह जी के निधन उपरांत रोजाना अखबारों में छपी श्रद्धांजलियों का एक संग्रह है)।

जिस कै अंतरि बसै निरंकारु॥
तिस की सीख तरै संसारु॥
गउड़ी सुखमनी महला ५॥ (पृष्ठ २६९)
खोजत खोजत सुनी इह सोइ॥
साधसंगति बिनु तरिओ न कोइ॥ (पृष्ठ ३७३)

साहिब श्री गुरु ग्रन्थ जी में श्री गुरु अर्जुन देव जी नें सुखमनी साहिब में दरसाया है कि जिस इन्सान में अकाल पुरख का वास है—भाव जो इन्सान दैवी गुणों (दया, धर्म, सन्तोष, संयम, त्याग और गुरवाणी आदि) से भरपूर है, वह बाकी संसार के जीवों को एक आदर्श जीवन जीनें के लिए पथ-प्रदर्शन करता है। साधू टी. एल. वासवानी की जीवनी में बहुत अच्छे ढंग से ऐसे लिखा है: "A living model has greater power to influence and direct the lives of people than do a thousand principles or doctrines preached by words of mouth or written in books." अर्थात् मुंह से कहे हुए अथवा किताबों में लिखे हुए हजारों असूल या मत दूसरों की जिन्दगी पर उतना प्रभाव नहीं डालते या पथ-प्रदर्शन नहीं करते जितनी कि एक आदर्श जीवन जीने वाली जीती-जागती सम्पूर्ण उदाहरण। भगत पूर्ण सिंह जी एक ऐसे ही जीते-जागते उदाहरण हुए हैं। वह दैवी गुणों से सम्पन्न थे जिनका पता उनके भलाई के कार्यों से लगता है।

गुरुद्वारा डेहरा साहिब लाहौर में भगत पूर्ण सिंह जी को एक चार साल का अपाहिज बच्चा लावारिसी की हालत में बैठा हुआ मिला जिसकी माँ मर चुकी थी और बाप बच्चे को घर में छोड़ कर भाग गया था। अनाथालयों ने भी उस बच्चे को दाखिल करने से इंकार कर दिया था। यहाँ तक कि ग्रन्थी सिंह ने भी

उसकी सेवा संभाल करने में असमर्थता प्रगत की थी परन्तु भगत पूर्ण सिंह जी का कोमल हृदय उसकी बेबसी और लाचारी बर्दाश्त न कर सका। उन्होंने उसे उठा लिया और ममतामया प्यार से उसका पालन-पोषण किया जिससे उन्हें हार्दिक खुशी प्राप्त हुई जिसका वर्णन इस किताब में लिखे उनके एक लेख: "माँ के हृदय की विश्व में विशेष स्थान" में किया है। उन्होंने लिखा है कि "अपाहिज की सेवा सम्भाल का काम करके मैं खुदा की खुदाई को धरती पर ले आया हूं।" भगत जी को यह एहसास हुआ कि वह परमात्मा के सच्चे सुपुत्र हैं जैसे कि गुरु ग्रन्थ साहिब के इस शब्द में फरमाया है –

सफलु जनमु हरि जन का उपजिआ ॥
जिनि कीनो सउतु बिधाता ॥ (पृष्ठ ५३२)

आगे जाकर भगत जी लिखते हैं: "परमात्मा ने हर बच्चे की पालना के लिए माँ पैदा की होती है, लेकिन जिस बच्चे की माँ भी मर जाये और वह हो भी अपाहिज और कोई पुरुष या स्त्री उसे पुत्र के तौर पर अपनाने के लिए भी तैयार न हो और न ही कोई अनाथालय उसको दाखिल करे, तो उसकी पालना पूरे प्यार और फिकर से करने वाला व्यक्ति परमात्मा को कितना अजीज होगा, इसका अनुमान लगाना मुश्किल है। उसकी उपमा उसी को बन आती है। गुरु साहिब उसको 'हरिजन' अर्थात् भगत का दर्जा देते हैं।" मुझे इस बात का मान है कि मैंने अपाहिज बालक को माँ के हृदय की तरह पाल-पोस कर परमात्मा के भक्ति पथ पर चलने का छोटा-सा यत्न किया। भगत जी का यह विश्वास था कि दिल के दर्द से की हुई निष्काम सेवा ही भक्ति है जिससे परमात्मा को पाया जा सकता है।

भगत पूर्ण सिंह जी हिन्दुस्तानी सभ्यता के नियमों के (सादा जीवन जीना, सादा भोजन और ऊंचे विचार रखना) दिलो-जान से उपासक थे। इसी सभ्यता को उन्होंने अपनाया

हुआ था और उन्होंने अपने हृदय की गहराइयों से लोगों को भाषण देकर और लेख लिख कर इसका प्रचार भी किया। इस किताबचे में उनका लिखा हुआ एक लेख जिसका शीर्षक 'सदियों से अजमाइस में पूरे उतरे रीति-रिवाजों को बचाओ' है। पश्चिमी सभ्यता के प्रभाव में आये हुए पढ़े लिखे भारतीयों को भगत जी ने 'काले अंग्रेज' कहा है। उन्होंने उनको चेतावनी दी है कि वे गरीबों को कीड़े-मकोड़ों की तरह भूख-नंग से मरने से बचाने के लिए अपने खर्चे कम करें। लोगों ने अपने खर्चे इतने अंधा-धुंध बढ़ाए हुए हैं जिनकी वजह से उनको कई गलत काम करने पड़ते हैं जैसे रिश्वत लेना, कम तोलना, वस्तुओं के मूल्यों में वृद्धि करनी, मिलावट करनी और टैक्सों की चोरी करनी, इत्यादि। भगत जी उन लोगों को चेतावनी देकर कहते हैं—"देसी अंग्रेज अफसरो और अमीरो! जब देश की आधी आबादी कंगाल हो चुकी है तो क्या तुम्हें अपने फालतू खर्चे कम करने का ख्याल नहीं आ रहा? देश के लिए भारी खतरे पैदा हो चुके हैं। तुम लिफाफों और गत्ते के डिब्बों में चीजें लेना बन्द कर दो। बुशर्ट और पतलूनें छोड़ कर कमीज-पायजामे पहन लो। दीवाली वाले दिन गुड़ के बने गुलगुले और मट्ठियां बनाया करो। काले अंग्रेज अफसरों और अमीरों! गरीबों की बददुआयों से बचो। ये बदुआएं भस्म कर दिया करती हैं।"

सादा जीवन जीने के नियमों को मजबूत करने के लिए इसी किताब में ही भगत जी ने स्विटजरलैंड के राष्ट्रपति के सादा जीवन बारे उदाहरण बड़े अच्छे ढंग से दिया है।

भगत पूर्ण सिंह जी हर बात भविष्य को ध्यान में रखकर किया करते थे जैसे कि सफेदे की जगह नीम, बरौटा और पीपल लगाने के लिए प्रेरित करते थे क्योंकि ये वृक्ष शीतलता प्रदान करते हैं, इन पर कई पक्षियों के घोंसले बनते हैं और वायु मण्डल को हर तरह से प्रदूषित होने से बचाते हैं। यह बात

भगत जी ने जोहन रसकिन के लेख The Glory of Building 'उसारी की महिमा' से सीखी। रसकनि ने लिखा है: "मनुष्य के किये हुए कामों की शोभा, सुन्दरता और असली शान अधिक तब बढ़ती है अगर वे काम आने वाले समय को ध्यान में रखकर किये जायें। किसी मनुष्य की दूरदर्शिता, शान्ति और भरोसे-भरा संतोष ही उस मनुष्य को दूसरे मनुष्यों से भिन्न करते हैं और परमात्मा के नजदीक पहुँचाते हैं। दुनिया में कोई काम या कला ऐसी नहीं है जिसकी शोभा हम इस तरीके से न परख सकें? इसलिए हम जब भी किसी काम की उसारी करें तो हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि हम जो उसारी कर रहे हैं वह सदा रहने वाली उसारी कर रहे हैं।"

बात यहां समाप्त होती है कि भगत पूर्ण सिंह जी ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब से ली हुई प्रेरणा के अनुसार अपना जीवन व्यतीत किया। हर सुख-दुःख और मुश्किल में परमात्मा का धन्यवाद करते रहे और उसको साक्षी मान कर अहंकार-मुक्त होकर और निर्भय होकर निष्काम सेवा में लगे रहे और परमात्मा की खुशियाँ प्राप्त करते रहे। जैसे श्री गुरु ग्रंथ साहिब में लिखा है—

'से भगत हरि भावदे जो गुरमुखि भाई चलंनि ॥
आपु छोडि सेवा करनि जीवत मुए रहंनि ॥' (पृष्ठ २३३)

मैं सभी संगतों की धन्यवादी हूं जो ऐसी किताबें छापने के लिए हमें माया और शुभ इच्छाएं भेजती हैं। आशा करती हूं कि भविष्य में भी संगतें पिंगलवाड़े के सेवादारों के लिए भगवान् से प्रार्थना करें कि वे मरीजों की प्रेम-भाव से सेवा करते रहें।

डॉ. इन्द्रजीत कौर,
प्रधान,
आल इण्डिया पिंगलवाड़ा चैरीटेबल सोसायटी (रजि.) अमृतसर

कहानी रह जाएगी भगत पूर्ण सिंह की

जनसत्ता, 23 अगस्त, 1992

पंजाब की हरी-भरी धरती पर जो खून की लकीरें खिची हैं और जो अंधकार फैला है उसमें शांति, करुणा और रोशनी की उम्मीद की तरह थे भगत पूर्ण सिंह। अनाथों और अपाहिजों की सेवा में पूरा जीवन लगा देने वाले भगत जी अब नहीं हैं, पर पिंगलवाड़ा के इस महात्मा नें इंसानी हमदर्दी की जो मिसाल छोड़ी है उसको याद करके आज के तहस-नहस होते पंजाब में एक भरोसा बंधता है। भगत पूर्ण सिंह के निधन पर उनके जीवन की मर्म छूने वाली कहानी, दीन-दुखियों के बीच उनके काम और उनके बनाए पिंगलवाड़ा आश्रम के बारे में बता रहे हैं—

ओम थानवी

बारह बरस से हरी धरती पर लाल लकीरें खींचते और कोई चालीस साल से विलास के मोहपाश में जकड़े पंजाब में भगत पूर्ण सिंह एक उम्मीद को बांधे अलग खड़े नजर आते थे। उनकी उम्र पूरी हो गई। इनके साथ पंजाब में करुणा की एक दास्तान भी पूरी हो गई। भगत पूर्ण सिंह अमृतसर के मशहूर आश्रम पिंगलवाड़ा के संस्थापक थे। लाचार, बीमार अपंग और अनाथ लोगों की सेवा करते-करते उन्हें जब महसूस हुआ कि बेसहारा लोगों का एक घर भी होना चाहिए तो उन्होंने पिंगलवाड़ा के निर्माण का संकल्प लिया।

वे कहते थे कि एक चार वर्षीय लावारिस बच्चे की दशा



पिंगलवाड़ा आश्रम के लावारिस बच्चे

ने उन्हें इस बात के लिए ज्यादा कुरेदा कि सड़क की सेवा अधूरी सेवा ही होगी। वह बच्चा उन्हें 1934 में लाहौर के डेहरा साहिब गुरुद्वारे के बाहर मिला था। तब भगत जी उन्नीस वर्ष के रहें होंगे। वह बच्चा बोल नहीं सकता था, और न ही वह लकवे के कारण चल-फिर ही सकता था। भगत जी ने उस बच्चे को गोद में उठा लिया और जीवन-भर वह 'बच्चा' उनकी साधना के रूप में उनके पास रहा। वह बच्चा और कोई नहीं, पिंगलवाड़ा में सबके प्रिय बुजुर्ग प्यारा सिंह हैं जो हरदम आपको एक कुर्सी पर किसी तपस्वी की तरह मौन बैठे दिखाई देंगे। भगत जी 88 वर्ष के थे और प्यारा सिंह 63 वर्ष के हैं। पर जीवन की आखिरी घड़ी तक भगत जी प्यारा सिंह को दैनिक निवृत्ति से लेकर कपड़े बदलने तक के काम खुद अपने हाथों से करते थे। आज भगत जी के न रहने से पूरा पिंगलवाड़ा अपने को अनाथ-सा महसूस करता है। पर सबसे ज्यादा उदासी प्यारा सिंह जी के चेहरे पर पढ़ी जा सकती है।

भगत पूर्ण सिंह पंजाब के गांधी कहे जाते थे। कभी उनकी तुलना लोग मदर टेरेसा से करते। गांधीवादी तो भगत जी थे ही, करुणा की भी वे मूरत थे। लेकिन कोई उनके तकलीफों-भरे बचपन और बाकी जीवन पर नज़र डालें तो लगेगा कि इन परिस्थितियों में एक समाज सेवक का बड़े होना अपने में विलक्षण घटना थी।

एक दफा मेरे आग्रह पर भगत जी ने अपने बचपन और जवानी की कुछ आपबीती बोलकर लिखवा भेजी थी। उनके जीवन का यह शायद सबसे प्रामाणिक दस्तावेज होगा। इसके मुताबिक लुधियाना जिले के राजेवाल गांव में 1904 में भगत जी का जन्म हुआ था। उनके पिता खत्री थे और मां जट्ट परिवार की। असल में माँ की दूसरी शादी थी। पहला

पति मुकलावे से पहले चल बसा था। दूसरी बार जिसने उसे अपनाया, वह पहले से विवाहित था और उसका एक बेटा भी था। जब जट्ट परिवार की विधवा उसके घर में आई तो किसी ने उसे सलाह दी कि इस विधवा से कोई बच्चा न हो, वरना खत्री और जट्ट स्त्री के बच्चों की शादी समाज में मुश्किल हो जाएगी। बहकावे में आकर भगत जी की माँ के तीन गर्भ गिरवा दिए गए। चौथा बच्चा गर्भ में ही आया तो माँ ने मिन्नत की। पति ने बात मान ली और भगत जी का जन्म हुआ।

भगत जी का बचपन न सिर्फ तकलीफ बल्कि अपमान के बीच बीता। अपमान इसलिए कि उनकी माँ विवाहिता पत्नी नहीं थीं। पर जब तक पिता जीवित थे, अपमान की घड़ियां शुरू नहीं हुई थीं। पिता साहूकारी करते थे। 1914 के अकाल में उनका कारोबार चौपट हो गया। माँ चाहती थी कि बेटा दस जमात पढ़े। पिता जल्दी चल बसे और माँ चक्की पीसने की मजदूरी करने लगी। किसी ने कहा कि चक्की पीसकर बेटे को दस जमात पढ़ा न पाओगी।

इस बीच मिंटगुमरी की जेल में एक डॉक्टर के घर माँ को दस रुपये महीने का काम मिल गया। डॉक्टर बाद में लाहौर आ गया, साथ में भगत जी की माँ भी। माँ लाहौर में बरसों बर्तन मांजने का काम करती रही। भगत जी की पढ़ाई के लिए वह दस रुपये का मनीआर्डर भेजती थी। पर दसवीं जमात में भगत जी फेल हो गए। फेल होने पर माँ ने उन्हें जो चिट्ठी भिजवाई, वह भगत जी को सदा याद रही। माँ ने लिखा था: 'उदास न होना। रोटी फेल भी खाते हैं।' भगत जी लिखते हैं: 'वह किसान की बेटी थी। उसने देखा था कि किसान माँ-बाप सूरज चढ़ने से पहले खेतों में चले जाते हैं और हाथों से मेहनत करते हैं। अगर वह (माँ) कुर्सी पर बैठने वाले अफसर की बेटी होती तो मेरे फेल होने पर कहती कि हम बड़े बदकिस्मत हैं।

अब तुम कुर्सी पर बैठकर कलम हाथ में लेकर काम नहीं कर सकोगे।' बाद में माँ ने उन्हें लाहौर बुलवा लिया। वहां उन्होंने दसवीं में फिर दाखिला लिया और छात्रावास में रहे।

पढ़ाई में भगत जी का मन ज्यादा लगा नहीं। वे कुछ अलग करना चाहते थे। उन्होंने समाज सेवा का व्रत लिया और बिना तनख्वाह गुरुद्वारा डेहरा साहिब में काम करने लगे। बरसों वे लाहौर में बेसहारा लोगों का सहारा बने रहे और गुरुद्वारे में ही रहे।

भगत पूर्ण सिंह जी का असल धर्म तो इन्सानियत ही था। पर समाज में सिख और हिन्दू से एक साथ संस्कार पाने वाले वे मिसाल थे। वे सन् 1932 में सिख बने। उनका बचपन हिन्दू संस्कारों में बीता। उन्होंने लिखा है कि 'उनके बचपन का नाम राम जी दास था। रोज शाम को मैं शिवजी के मन्दिर में माथा टेकने जाता था। गर्मी की छुट्टियों में मैं हर रोज शिवलिंग पर इक्कीस बेलपत्र चढ़ाता। पण्डित श्रद्धाराम से मैंने यज्ञोपवीत पहना था।'

माँ की दीक्षा ऐसी थी कि वे मन्दिर जाते थे और गुरुद्वारे भी। 'गांव की उदासी धर्मशाला में गुरू ग्रन्थ साहिब का प्रकाश रोज होता तो माँ रोज मुझे वहां भी भेजती, जैसे मन्दिर भेजती थी।' लेकिन भगत जी को गुरू ग्रन्थ साहिब का असल संदेश बाहर से मिला। 'मेरे हृदय पर किसी का प्रभाव पड़ा तो गांवों के रविदास संत ब्रह्मदास का। वह रागी था। उसके दोनों बेटे भी रागी थे। तीनों का जत्था था। एक बेटा जोड़ी बजाता, दूसरा बाजा। आप वह ताऊस बजाता था। वह सांस-सांस वाहिगुरू का सिमरन करता था। जब वह कीर्तन करता तो साथ-साथ उसकी व्याख्या भी करता था।

भगत जी एक बार सचमुच के 'धर्म-संकट' में भी पड़ गये थे। सन् 1931 की जनगणना के दौरान सरदार उज्जवल सिंह (पत्रकार खुशवंत सिंह के चाचा) ने असेम्बली में कानून पास करवा दिया कि सिख वही है 'जो दस गुरुओं के अलावा और किसी को अपना गुरू नहीं मानता'। भगत जी सोच में पड़ गए। 'मैंने सोचा भगवान् राम और कृष्ण मुझे कहेंगे कि हम तुम्हें अपने दस गुरुओं को मानने से नहीं रोकते, लेकिन तुम हमें क्यों छोड़ रहे हो ?'

लेकिन भगत जी की प्रेरणा का सबसे बड़ा स्रोत तो उनकी मां ही थीं। भगत जी याद करते थे कि गांव में एक दफा जब महामारी फैली तो कैसे उनकी माँ रोगियों से मिलने घर-घर जाया करती थी। उस समय मैं अपनी माँ की गोद में होता था।

सन् 1929 में माँ बीमार पड़ी तो भगत जी उसे लेकर गांव लौटे। वहां यह समझा गया कि वे पिता की सम्पत्ति से हिस्सा लेने आए हैं और तो और, उन्हें रहने की जगह तक न मिली। जिस घर में भगत जी की माँ रहती थी, उसमें भगत जी का सौतेला भाई आ चुका था। भगत जी के शब्दों में: 'माँ ने कोई गिला न किया। हम गांव से लौट आए। अमृतसर आए और बेघरों की तरह वहां डेढ़ साल गुजारा।' कुछ महीने उन्होंने तरनतारन की धर्मशाला में काटे। फिर दरबार साहिब की सड़क पर माँ-बेटे उस जगह बैठते रहे जहां भिखारी बैठते थे। बाद में वे छेहारटा साहिब के गुरुद्वारे चले गए और वहां खुली जमीन पर छप्पर डालकर रहे। भगत जी लंगर पकाने की सेवा करते रहे और रोटी मिलती रही।

भगत जी ब्रह्मचारी थे। उन्होंने विवाह क्यों नहीं किया इसकी भी एक कहानी हैं। एक रोज उनकी माँ ने कहा कि तकलीफ का जीवन हम जो गुजार रहे हैं इसमें दोष तुम्हारा नहीं, मुझसे ही पाप हुए हैं। भगत जी ने माँ से कहा—जो औरत

तपती दुपहरी में गांव के बाहर चौरास्ते की पुलिया पर बैठकर मुसाफिरों को पानी पिलाती हो, अढ़ाई सौ घरों की गाय-भैंसों के पीने के लिए कुएं से पानी खींचती हो, पीपल-बरोटा-नीम की त्रिवेणी लगाती हो, मुझसे राह के कांटे और पत्थर उठवाती हो, पक्षियों को दाना डलवाती हो, पूर्णमासी का व्रत रखकर सत्यनारायण की कथा सुनती हो, और सुबह भिक्षा के लिए आने वाले संतों से जपुजी साहिब का संथा लेती हो, वह भला पाप कैसे कर सकती है? मां ने तीन गर्भ गिराने की बात-सुनाई। वह बोली कि एक गर्भ गिराने पर जन्मा बच्चा सांस ले रहा था। भगत जी नें कहा, "यह पाप तो मेरे पिता नें करवाया था। तुम बेवश थीं। तुम्हारा वश चलता तो क्या तुम ऐसा करतीं?"

पर मां के ख्याल पूर्ण सिंह बदल नहीं पाए। आखिर एक रोज बोले—'तुम्हारे मन में पाप का भूत बैठ चुका है जो निकलेगा नहीं। इसलिए आज तुम्हारे सामने मुझे यह प्रण करने की जरूरत महसूस होती है कि पुण्य-पाप के प्रायश्चित् के लिए मैं अपनी सारी उम्र सेवा में लगा दूं। सारी उम्र कुंवारा रहूं और हृदय की पूरी शुद्धता से वह जीवन व्यतीत करूं।' भगत जी ने यह प्रण कैसे निभाया, अब यह सब जानते हैं।

बेसहारों के लिए अपने आपको समर्पित करने से पहले पूर्ण सिंह लाहौर के डेहरा साहिब गुरुद्वारे में आम सेवक थे। गुरुद्वारे में संगतें स्नान करती थीं। पानी निकालने वाले रहट के भैंसे को पूर्ण सिंह हाँकते थे। भक्तों के स्नान का इन्तजाम करने के बाद वे भैंसे के लिए तूड़ी और चारे का प्रबन्ध करते। फिर जूठे बर्तनों को मांजने बैठते। बर्तन साफ कर लंगर में सिक रही रोटियाँ पलटते। लंगर पकने पर संगतों को लंगर वरताते। इसके बाद बर्तन मांजने का सिलसिला फिर शुरू हो जाता। इस बीच लंगर के लांगरी सो जाते थे पर भगत जी

नहीं सोते। 'क्या पता कौन मुसाफिर भूखा रह जाए। कोई तो हो जो महंत जी को जाकर बताए कि प्रशादा पूरा हो चुका और तैयार करना है। चार बजे भगत जी उस गुरुद्वारे का फर्श धोते थे। रात को लंगर बरताते।

एक रात गुरुद्वारे में कोठे की छत से एक आदमी गिर पड़ा। भगत जो रात को ही उसे मेयो अस्पताल ले गए। तब के पंजाब में 29 जिलों का वह सबसे बड़ा अस्पताल था। दौड़-भाग कर डॉक्टर ढूंढ़ा और इलाज करवाया। गिरने वाला चलने-फिरने लगा तो भगत जी ने अपने भीतर असीम शान्ति अनुभव की। ऐसे ही एक रोज गुरुद्वारे में अधेड़ व्यक्ति आया जिसके पांव में कीड़े पड़े हुए थे। भगत जी मेयो अस्पताल का नक्शा जान चुके थे वे उसे भी वहां ले गए। अस्पताल के पलंग पर बैठकर उस मरीज ने आंखें बन्द की और बोला—'अब मैं चैन से मर सकूंगा।' ये शब्द भगत जी के कलेजे में उतर गए। उन्होंने ठान ली कि अब मेरा आगे का जीवन लाचार, बीमार लोगों की सेवा में जाएगा। भगत जी गुरुद्वारा डेहरा साहिब से बाहर निकले। वे रोगियों और अपाहिजों को बाकायदा ढूंढ़ते थे। उनके जीवन का यह मिशन ही बन गया था।

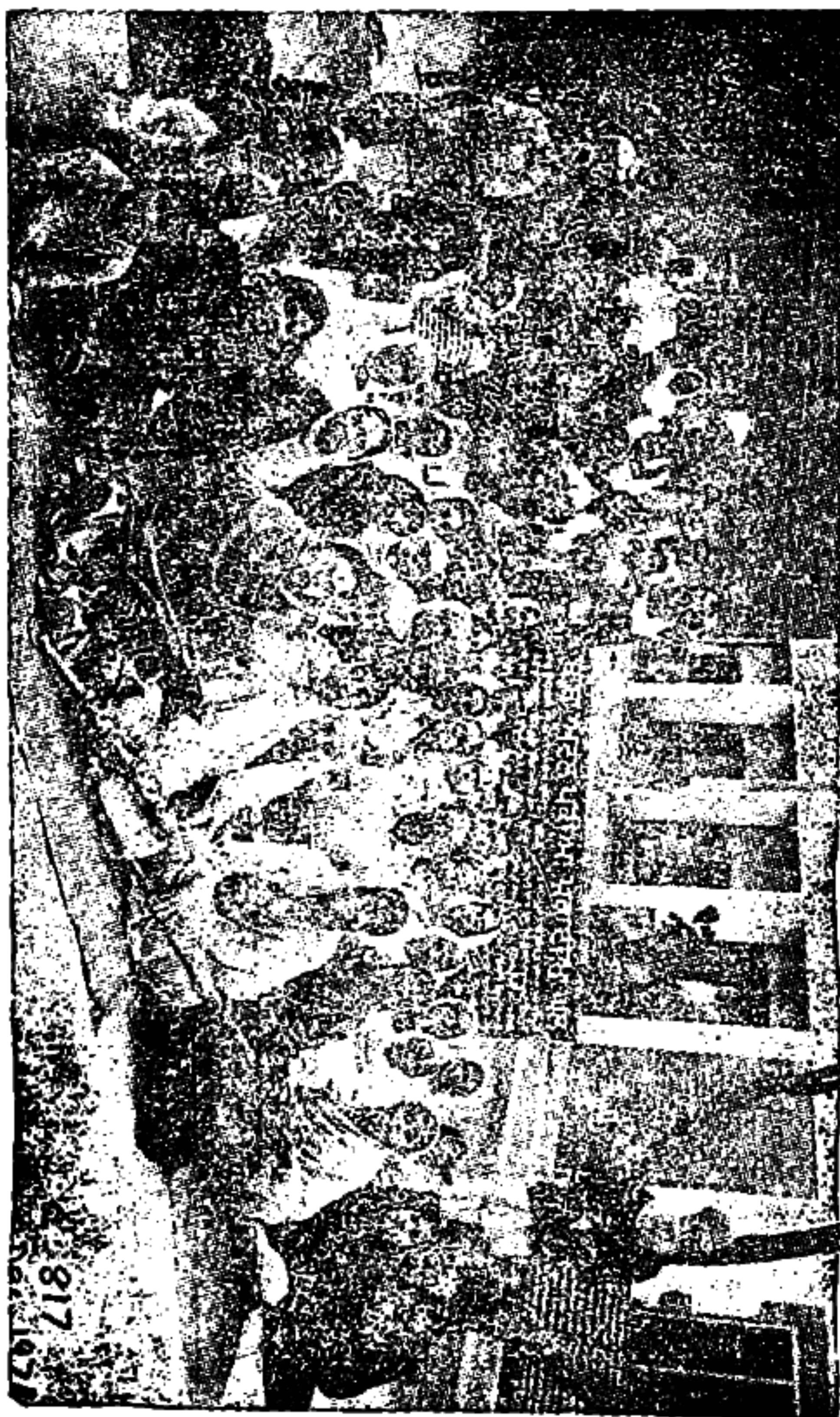
गुरुद्वारा डेहरा साहिब शहर से बाहर था। बादशाही मसजिद और किले के बीच पौन किलोमीटर का रास्ता था। गुरुद्वारे आने वाले भक्त और मिंटो पार्क सैर को जाने वाले लोग वहां से गुजरते थे, इसलिए उस रास्ते पर बहुत से भिखारी बैठा करते थे। बैठे-बैठे एक भिखारिन वहां बेहोश होकर गिर पड़ी। वह कृशकाय थी और किसी को उसके बचने की उम्मीद नहीं थी। भगत जी उसे बचा नहीं सके, पर निश्चय ही उस बूढ़ी भिखारिन ने चैन से दम तोड़ा होगा। मरने से पहले लगातार छह दिन उसे हरी दस्त आती रही। भगत जी उसके दस्त वाले कपड़े धोते रहे। गर्मी के दिन थे। दस्त में चर्बी

आती थी। एक कपड़ा सूखने से पहले दूसरा कपड़ा दस्त से भर जाता था। भगत जी कहते थे श्रवण कुमार की कहानी ने उन्हें बहुत प्रेरणा दी। एक माँ की सेवा से प्रेरित भगत जी ने जाने कितनी माताओं की सेवा की। दीन-दुखियों की सेवा के भगत जी के प्रसंगों का पार नहीं है और सारा काम अकेले।

लाहौर में रहते हुए भगत जी ने काफी कुछ पढ़ा भी। जब भी वक्त मिलता, वे दयाल सिंह लाइब्रेरी में जा बैठते या लाला लाजपत राय की द्वारिका दास लाइब्रेरी में। जॉन रस्किन और इमरसन फिलासफर उनको बहुत भाते थे। टायसन फिलासफर भी। गांधी जी का हर लेख वे बोल-बोल कर पढ़ते थे। सन् 1927 में गांधी जी का लेख 'उड़ीसा का कंकाल' पढ़कर वे जार-जार रोए थे।

बंटवारा होने पर भगत जी प्यारा सिंह को लेकर लाहौर से अमृतसर आ गए। एक शरणार्थी शिविर में रहे। धीरे-धीरे ज्यादातर शरणार्थी आबाद हो गए। शिविर में वही रह गए जो आबाद हो नहीं सकते थे—अनाथ, अकेले, बीमारी और अपाहिज लोग। शिविर सरकार ने अचानक बन्द कर दिया। भगत जी ने सोचा उन्हें भी कुछ करना होगा। कटोरा उठाया और आने-जाने वाले के सामने हाथ फैला दिया। फिर एक ठिकाना भी मिल गया। अमृतसर छोड़ गए लोगों के कई घर खाली पड़े थे। एक में डेरा जमा दिया और 'पिंगलवाड़ा' का काम शुरू हो गया। आज पिंगलवाड़ा अपने में एक बड़ी संस्था बन चुकी है।

पंजाब में आज रोज खून की होली खेली जाती है। लोगों को लगता है इन्सानियत का यहां लोप हो चुका। जिन्होंने आस छोड़ दी वे किसी सुबह भगत पूर्ण सिंह जी का भी नाम लें तो ताकत महसूस करेंगे। बेगुनाहों का खून बहाने वाले बर्बर बन्दूकधारियों पर शायद बेसहारों के एक मसीहा का नाम भारी पड़े।



पिगलवाड़ा आश्रम के बच्चों के साथ डॉ. इन्द्रजीत कौर

प्रेम का घर है पिंगलवाड़ा

लेखक – जगतार सिंह लांबा

देश आजाद हुआ, तब भगत पूर्ण सिंह जी लाहौर से अमृतसर आ गए थे और पिंगलवाड़ा स्थापित कर दिया था। सन् 1957 में यह संस्था आल इण्डिया पिंगलवाड़ा नाम से रजिस्टर्ड हुई और सेवा का काम बड़े पैमाने पर होने लगा।

आज पिंगलवाड़ा किसी तीर्थ से कम नहीं। वह असहाय और समाज से तिरस्कृत लोगों की शरणस्थली ही नहीं है, बल्कि एक ऐसा घर है जहां दुःखी लोगों को आश्रय ही नही, भोजन के साथ वह सब मिलता है जिससे वे सारी उम्र वंचित रहते। दवा, खासकर प्यार और अपनापन।

गांधी जी के अनुयाई, खद्दरधारी भगत जी ने पिंगलवाड़ा जन-सहयोग से शुरू किया था। उन्होंने खुद लोगों के सामने हाथ फैलाया। असहाय लोगों के सेवक के रूप में शहर में उन्हें हर कोई जानने लगा था। इसलिए उन्हें मुंह से कुछ मांगने की जरूरत नहीं पड़ती थी। जहां हाथ आगे करते, कोई कुछ न कुछ रख जाता। आज भी जन-सहयोग पिंगलवाड़ा का बड़ा आधार है। जगह-जगह आप को काले*बक्से टंगे मिलेंगे, जिस पर तीन भाषाओं में सिर्फ 'पिंगलवाड़ा' लिखा है। आप बस या रेल में सफर कर रहे हों तो ऐसा बक्सा आपके सामने से गुजरेगा, पर चुप-चाप।

पिंगलवाड़ा में इस समय करीब* चार सौ असहाय लोग हैं इनमें बड़ी तादाद मानसिक सन्तुलन खो चुके लोगों की है। चालीस लोग तो ऐसे हैं जो जन्म से पागल हैं। सवा सौ पागल स्त्रियां और साठ आदमी। पचास युवतियां हैं जो पागल भी हैं और कई रोगों से पीड़ित भी हैं। कइयों के साथ समाज में पाशविक सलूक हुआ और आखिर पिंगलवाड़ा में जीवन-दान मिला। इनके अलावा पिंगलवाड़ा में बूढ़े स्त्री-पुरुष, नेत्रहीन, गूंगे-बहरे, लूले और बीमार लोग हैं। आठ बच्चे हैं जिन्हें पढ़ने भी भेजा जाता है। इन रोगियों की सेवा के लिए नब्बे सेवादार

---

*अब ये दान-पात्र (बक्से) संस्था की ओर से बन्द कर दिए गए हैं।
*2013 में अब 1662 से अधिक हैं।

हैं और पैंतालिस सेवादारनियाँ।

*सन् 2001 में पिंगलवाड़ा का सलाना बजट लगभग 7 करोड़ 35 लाख रुपए का है। इसमें करीब 78 लाख रुपए का दान विदेश से और एक करोड़ पंचान्वे लाख का स्वदेश से प्राप्त होता है। भारत सरकार ने पिंगलवाड़ा की मदद के लिए कभी कोई राशि नहीं दी। पंजाब सरकार का योगदान सिर्फ 50 हजार रुपए का है। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी जरूर अढ़ाई लाख रुपया सालाना देती है। यह राशि इस वर्ष से तीन लाख कर दी गई है। नगर निगम से पहले दस हजार रुपए सालाना मिला करता था। बरसों से अब यह बन्द है।

इस वक्त पिंगलवाड़ा की सबसे बड़ी समस्या जगह की है। चार एकड़ जमीन पर बनी दो इमारतें अभी हैं, पर फैले हुए काम को देखते वे काफी नहीं हैं। संस्था के प्रबन्धक और भगत जी के निकट सहयोगी रहे सुरजीत सिंह राही के मुताबिक मानसिक सन्तुलन खोए व्यक्ति को सम्भालने के लिए वैसे भी ज्यादा जगह की जरूरत होती है। लेकिन पिंगलवाड़ा में एक बैड पर दो-तीन पागल स्त्रियों को सुलाना पड़ता है। जबकि अमृतसर के मेन्टल अस्पताल के पास 90 एकड़ जमीन है और मरीज वहां केवल पाँच सौ हैं। जगह की कमी के बावजूद पिंगलवाड़ा का काम दिन-ब-दिन बढ़ता ही गया है। संस्था की तीन शाखाएं— मुख्य दफ्तर, माता महिताब कौर वार्ड, रामतलाई वार्ड तथा भाई प्यारा सिंह वार्ड सिटी सेन्टर अमृतसर के पास। इसके अलावा संस्था की शाखाएं मानांवाला कम्पलैक्स, पंडोरी वड़ैच, जालन्धर, गोइंदवाल, संगरूर और पलसौरा चंडीगढ़ में भी हैं।

पिंगलवाड़ा के कार्य के लिए भगत जी को बीते साल ही सद्भावना एवार्ड से सम्मानित किया गया था।

सन् 1981 में भारत सरकार ने उन्हें 'पद्मश्री' सम्मान दिया था पर हर रोज दरबार साहिब माथा टेकने जाने वाले भगत जी ने ऑप्रेशन ब्लू स्टार के बाद रोष में पद्मश्री लौटा दिया था।

---

* सन् 2011-12 में संस्था का सालाना बजट 21 करोड़ 80 लाख रुपए के करीब है।

हरि के सेवक जो हरि भाये तिन की कथा निराली रे ।
आवहि न जाहि न कबहू मरते पारब्रह्म सगारी रे ॥



मानवता के मसीहा भगत पूर्ण सिंह जी (1904-1992)

लावारिस पागल बच्चों, पागल औरतों-मर्दों, बीमारों अपाहिजों और बेसहारों के सचमुच मसीहा थे भगत पूर्ण सिंह जी।

एक अनोखा पर्यावरण-प्रेमी

भगत पूर्ण सिंह जी पर्यावरण के सवालों से भी गहरे जुड़े थे। वे फैशनेबल पर्यावरण-वादी नहीं थे। वे पर्यावरण के बारे में पत्र-पत्रिकाओं में छपे तमाम अच्छे लेखों को अपने ही प्रैस में छापकर उन्हें लाखों लोगों में मुफ्त बांटते थे। उनके इस योगदान पर जगजीत सिंह की टिप्पणी।

कर्मयोगी पूर्ण सिंह जी एक अनूठे किस्म के पर्यावरण-वादी भी थे। यह उनके बारे में बहुत कुछ जानने वाले भी बहुत कम जानते हैं। पर ऐसा अकारण नहीं है। उन्होंने पर्यावरण को कभी व्यवसाय नहीं बनाया। सिर्फ अखबारी और दूरदर्शन प्रचार हासिल करने के लिए 'पर्यावरण बचाओ' जैसे आन्दोलनों की दिखावेबाजी का सहारा नहीं लिया। वे किसी खास नदी, बाँध, पहाड़ या जंगल को 'विनाश से बचाने' के आन्दोलन में शामिल नहीं हुए। न उन्होंने धरती, आकाश और इंसानी सभ्यता को दरवेश खतरों पर कभी वातानुकूलित, पंच-सितारा गोष्टियों और सेमीनारों में महज लफ्फाजी-भरे आँसू बहाए।

फिर भी पूर्ण सिंह जी व्यावसायिक पर्यावरणवादियों की अपेक्षा कहीं ऊंचे दर्जे के और निःस्वार्थ पर्यावरणवादी थे। 'पिंगलवाड़ा का संत', 'पिंगलवाड़ा का महातमा' 'पिंगलवाड़ा का बाबा' और 'पिंगलवाड़ा का दरवेश फकीर' जैसे कई नामों से जाने-जाने वाले लावारिसों के मसीहा भगत पूर्ण सिंह जी ने पर्यावरण संरक्षण और विनाश के विभिन्न पहलुओं को अपने खर्चे पर बड़े ही दिलचस्प ढंग से आम आदमी तक पहुंचाने की एक नई मिसाल कायम की। वे बीस साल तक पृष्ठभूमि में रहकर प्रतिष्ठित पर्यावरण लेखकों के खोज-पूर्ण और जानकारी-भरे लेखों को लाखों-करोड़ों लोगों तक पहुंचाने के मिशन में जुटे रहे। यह सिलसिला उन्होंने आखिरी दम तक कायम रखा।

भगत पूर्ण सिंह जी इस सिद्धांत के पक्षधर थे कि जन-चेतना के बिना पर्यावरण सुधार का कोई भी प्रयास न केवल अधूरा है, बल्कि इस चेतना के अभाव में सुधारवादी उपायों और प्रयासों के सार्थक नतीजों की उम्मीद करना बेमानी है। इस चेतना के प्रचार-प्रसार के लिए भगत जी ने भाषण, बयान, प्रदर्शन और आन्दोलन की लीक से हटकर बिल्कुल नई राह निकाली। उन्होंने देश के विभिन्न अखबारों में हिन्दी, अंग्रेजी और पंजाबी में प्रकाशित करीब-करीब हर एक प्रमाणिक लेख को पर्चों और लघु-पुस्तिकाओं की शक्ल में छाप कर सार्वजनिक स्थल और खासकर धार्मिक स्थलों के जरिए आम आदमी तक मुफ्त पहुँचाकर पर्यावरण की जागरूकता पैदा करने का अभियान चलाया जिसकी मिसाल कम से कम अपने मुल्क में और नहीं मिलती। पश्चिम में चर्च ने पर्यावरण संरक्षण के साथ आम आदमी को जोड़ने के जिस सवाल को हाल के वर्षों में अपनाया, भगत पूर्ण सिंह जी ने उस पर बीस साल पहले अमल शुरू कर दिया था। दो दशकों में उन्होंने ऐसे सैकड़ों लेखों की लाखों प्रतियां छापकर उन्हें करोड़ों लोगों तक पहुँचाया।

बड़े शहरों में पर्यावरण जागरूकता की जो लहर महज संस्थानी गोष्ठियों-सेमीनारों तक सीमित रही, भगत पूर्ण सिंह जी ने उसे स्वर्ण मन्दिर जैसे अनेक ऐतिहासिक धर्म-स्थलों के जरिए जन-जन तक पहुंचाने की बुनियाद इसलिए डाली क्योंकि उनका यह दृढ़ विश्वास था कि आत्मिक-तौर पर धर्म-स्थान ही मनुष्य के सर्वाधिक करीब हैं और पर्यावरण जैसे अहम् मुद्दे के विविध पहलुओं को लोगों तक पहुँचाने का उनसे बढ़कर कारगर माध्यम और नहीं हो सकता। खुद एक निष्काम सर्वोदयी की मानिंद भगत जी अनेक बरसों तक स्वर्ण मन्दिर के बाहर पर्यावरण साहित्य हर आने-जाने वालों को अपने हाथों से बांटते रहे।

पर्यावरण को बचाने के सवाल पर भगत पूर्ण सिंह जी की चिंता कितनी वास्तविक थी, इसका अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि जिस किसी को भी जब वे अपने आश्रम पिंगलवाड़ा आने का आग्रह करते थे तो यह ताकीद भी कर देते थे 'देखो आटोरिक्शा से मत आना, उसके धुएं से प्रदूषण फैलता है। टांगा कर लेना या पैदल ही चले आना'।

मुझ जैसे अदना लेखक ने उस समय अपने आपको बेहद गौरवान्वित महसूस किया था जब कुछ सप्ताह पहले भगत जी ने एक चिट्ठी लिखकर 'जनसत्ता' में छपे मेरे पर्यावरणीय लेख को छापने की ख्वाहिश जाहिर की थी। इससे पहले कि मैं भगत जी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित कर पाता, वे इस दुनिया से चले गये। भगत जी के बिना न केवल आज पिंगलवाड़ा सूना और उदास, है, बल्कि पर्यावरण-जगत भी खुद को एक सच्चे हितैषी और निःस्वार्थ प्रचारक से महरूम महसूस कर रहा है।

पैदल चलो

पर्यावरण आज एक नारा बन चुका है। लेकिन भगत पूर्ण सिंह जी उन थोड़े लोगों में से थे जो बगैर शोर पर्यावरण के प्रति लोगों में चेतना जगाने का काम करते थे। स्वर्ण मन्दिर में आते-जाते श्रद्धालुओं को बढ़ते प्रदूषण के खिलाफ परचे बांटते उन्हें अपने साथियों के साथ अकसर देखा जा सकता था। ये परचे वे खुद लिखते थे और पिंगलवाड़ा के छापेखाने में छापते थे।

धुएं खिलाफ उन्होंने मुहिम चलाई। पिंगलवाड़ा के किसी काम में वे धुएं वाला वाहन इस्तेमाल नहीं होने देते थे। मरीजों को अस्पताल एक विशेष साइकिल गाड़ी से ले जाया जाता था।

हवा में बढ़ते धुएं के जहर से चिंतित भगत जी ने अपना एक संस्मरण इस तरह सुनाया था:

मेरे गांव में कोई प्राइमरी स्कूल नहीं था, इसलिए मुझे दूसरे गाँव को पांच साल तक पढ़ने जाना पड़ा। वह गांव हमारे गांव से दो किलोमीटर दूर था। सात साल की उम्र में मैंने उस गांव के स्कूल में जाना शुरू किया। चार किलोमीटर रोज चलने में मुझे कोई तकलीफ महसूस नहीं होती थी। रास्ते में बेरियां आती थीं। हम बेर खाते थे। तारे-मीरे की फसलें होती थीं तो हम उनकी गंदलें खाते। स्कूल से दौड़ते हुए घर आया करते थे।

बारह साल की उम्र में मैं खन्ना कस्बे के हाई स्कूल में दाखिल हो गया। उन्नीस साल की उम्र तक वहां पढ़ता रहा। हमारे गांव से वह स्कूल दस किलोमीटर की दूरी पर था। स्कूल से गांव में खेलते हुए आया करता था। कभी जेहन में नहीं आया था कि यह सफर मेरे लिए मुसीबत है।

नाभा शहर हमारे गांव से 40 किलोमीटर पर था। मैं दसवीं जमात में फेल हो गया और घर में बेकार बैठा था। घर में कंगाली थी। कोई पैसा नहीं था। दस रुपए महीने की मां की तनख्वाह से मैं सात साल पढ़ा। लेकिन उससे काम मुश्किल से चलता था। किसी से उधार भी नहीं ले सकता था तो एक रोज मुझे चार बजे नाभे जाने का ख्याल आया। आठ किलोमीटर चला था कि रात पड़ गई। रात मैंने गुरुद्वारे में काटी। दूसरे दिन मैं ग्यारह बजे नाभा पहुँच गया।

दो दफा मुझे इस तरह नाभे जाना पड़ा। एक दिन मैं नाभे से ग्यारह बजे चला और अंधेरा होने से पहले गांव पहुँच गया। मामूली बूंदा-बांदी का मौसम था। घोड़े की दुलकी चाल से मैं गाँव पहुंचा।

एक रोज मैं नैनादेवी गया। आनन्दपुर साहब हमारे गांव से 80 किलोमीटर की दूरी पर होगा। वहां जाने के लिए भी मेरे पास पैसे नहीं थे। वहां भी में पैदल गया और मुझे तकलीफ महसूस न हुई। आनन्दपुर साहब से नैनादेवी के मन्दिर

की तेरह किलोमीटर की चढ़ाई मैं दौड़कर चढ़ गया। मैं दौड़ता जाता और बैठकर पीछे रह चुके साथियों का इंतजार करता। मैं कोई मन्नत मांगने नहीं गया था। बल्कि तीर्थ-यात्रा की पावन भावना से गया था। किसी स्वार्थ से जाता तो रोते हुए जाता।

आज जब मैं युवा लड़कों को स्कूटरों का धुआं उड़ाते देखता हूं तो मुझे अपने लड़कपन के दिन बार-बार याद आते हैं। वे पैदल चलें तो समझें कि पैदल चलने की मस्ती क्या है।

पैदल चलें तो इसमें भला बिगड़ क्या जाता है? पैदल चलने में आनन्द ही नहीं है, सेहत के लिए वह एक जरूरी कसरत है। दयाल सिंह लाइब्रेरी (लाहौर) में 'न्यू हैल्थ' नाम का एक रिसाला मैं पढ़ता था। वह लन्दन से आता था। उसमें मैंने एक लेख 1928 में पढ़ा था कि आदमी को तन्दुरुस्त रहने के लिए रोज शरीर की फुट-टन शक्ति कसरत में खर्च करनी चाहिए और इतनी शक्ति साढ़े आठ मील पैदल चलने पर खर्च होती है।

अनमोल बचन

हम उपदेश सुनते हैं मन भर, देते हैं टन भर, किन्तु ग्रहण करते हैं कण भर। —अलबर्ट

आपके पास कहने को मीठी बात न हो, तो बिल्कुल चुप रहिए। —विनोबा भावे

झूठ और सच्चाई का मुकाबला होता ही रहता है लेकिन सच्चाई की कभी हार नहीं हुई। —निरंकारी बाबा

थोड़ा-सा झूठ भी इन्सान को नष्ट कर देता है जैसे दूध में एक बूंद ज़हर। —वेद

ऐसा सच मत बोलो, जिससे दूसरों का दिल दु;खे।—जैन आगम

सेवा के पर्याय थे पिंगलवाड़ा के भगत जी

चिंतक और कर्मयोगी के अलावा गजब के अध्येता थे भगत पूर्ण सिंह जी। उक्त विषयों के अलावा धार्मिक विषयों पर अपने खुद के लेखों में जिस व्यापकता से उन्होंने आर्नल्ड टॉयनबी, शेक्सपियर, होरेस बुशनेल, जनरल बूथ, बिम्बल, नेस्टन मैकड़ेनियल, सर पर्सि नन्न, टैगोर, कनिंघम जैसे विचारकों और इतिहासकारों को उद्धृत किया है, उससे खुद-ब-खुद इस बात का एहसास होता है कि कितना गहरा रहा होगा उनका अध्ययन। लेखक—जगजोत सिंह

जिस दरवेश फकीर ने अट्ठासी साल की उम्र तक जिन्दगी से कभी हार नहीं मानी, वह आखिर मौत से हार गया। उत्तरी भारत की मदर टेरेसा, और बीसवीं सदी का भाई घनइया और लूले-लंगड़ों का मसीहा कहे जाने वाले भगत पूर्ण सिंह जी अपने आप में एक पूर्ण और लासानी संस्था थे, वह संस्था जिसने न केवल समाज की उपेक्षा, घृणा और तिरस्कार के शिकार कोढ़ियों, अपाहिजों, मानसिक रोगियों और इधर-उधर दया की भीख मांगते लावारिस मर्दों, औरतों और बच्चों को बाप का प्यार और इज्जत की रोटी तथा छत दी, बल्कि पर्यावरण की सम्भाल, मानव-प्रेम, सामाजिक विकृतियों, एटमी तनाव, बढ़ती आबादी, शहरी जीवन की मारा-मारी, मौजूदा और आने वाले वक्त की चुनौतियों का अनूठा प्रचार और आम लोगों को उनके प्रति खबरदार करने के कार्य को अपने जीवन का मिशन ही बना लिया। दुनिया के ग्लैमर से दूर और मोह-माया से निलिप्त 'गुरू की नगरी' (अमृतसर) के एक कोने में

'पिंगलवाड़ा' की अपनी एक छोटी-सी दुनिया में मानवता की सेवा-सम्भाल में मशीन की मानिंद दिन-रात जुटे रहने वाले पूर्ण सिंह जी की शख्सियत के कई रूप थे—मिशनरी, धर्म-प्रचारक, चिंतक, विचारक, पर्यावरणवादी, समाज-सुधारक और न जाने क्या-क्या।

भगत जी का जन्म 4 जून, 1904 में लुधियाना के राजेवाल गांव में एक हिन्दू परिवार में हुआ। भगत जी का मूल नाम रामजी दास था। आर्थिक तंगी के कारण उन्हें अपनी पढ़ाई बीच में ही छोड़ देनी पड़ी। चौबीसों घण्टें भक्ति-भाव में तल्लीन रहने वाले रामजी दास सिक्ख-धर्म, सिद्धान्त और सेवा-परम्परा से इतने प्रभावित हुए कि वह इसी धर्म में दीक्षित हो गए और अपना नाम रामजी दास से बदल कर पूर्ण सिंह रख लिया।

खुद कभी पूर्ण सिह ने नहीं सोचा होगा कि देश के बंटवारे के बाद जेब में महज एक रुपया पांच आने लेकर एक शरणार्थी के तौर पर आश्रम की तलाश अमृतसर आने वाला पूर्ण सिंह एक दिन हजारों बेसहारों का सहारा बनेगा, दुःख-दर्द बांटेगा और कोई दिन ऐसा आएगा जब उसकी इस निःस्वार्थ सेवा के लिए भारत सरकार उसे 'पद्मश्री के सम्मानित करेगी।

पिंगलवाड़ा की बुनियाद भी बड़ी अजीब परिस्थितियों में पड़ी है। खुद भगत पूर्ण सिंह के शब्दों में 'पिंगलवाड़ा का जन्म 18 अगस्त, 1947 के दिन गुरू की नगरी श्री अमृतसर में हुआ था। उसी दिन मैं बतौर शरणार्थी गुरुद्वारा डेहरा साहिब लाहौर से इस शहर में पहुंचा था। मेरी पीठ पर एक लूला लड़का था और पैसों के नाम पर मेरे पास एक रुपया पांच आने थे। मैं अपने साथ एक मृतप्रायः बूढ़ा भी लाया था। मैं खालसा

कालेज के शरणार्थी कैम्प में पहुंचा। कैम्प में करीब 23 से 25 हजार के दरम्यान शरणार्थी औरतें, मर्द तथा बच्चे थे। उनमें कई रोगी थे और कई कमजोर शरीर वाले भी, जो अपनी सम्भाल खुद करने में असमर्थ थे। सरकार द्वारा उनकी देख-रेख के लिए कोई प्रबन्ध नहीं था। मैंने अकेले ही उन सभी रोगियों और अपाहिजों को सम्भाला, उनमें एक अपाहिज ऐसा भी था जिसकी पिंडली में कीड़े पड़े हुए थे। मैंने क्लोरोफार्म और तारपीन का तेल मिलाकर उसके कीड़े खुद निकाले। मैं दोनों वक्त घरों से प्रसादे (रोटियां) खुद मांगकर लाता था...मैं अकेला था...फिर लूला भी मेरे गले का हार था, मुझे उसको गोद वाले बच्चे की तरह सम्भालना पड़ता था।'

आज के इस मशीनी युग में जहां बेटा बूढ़े बाप की उंगली तक पकड़ने से इन्कार कर देता है, सेवा-भावी भगत पूर्ण जी उपरोक्त लूले को जो उन्हें चार साल की शैशवावस्था में लाहौर में गुरुद्वारा डेहरा साहिब के बाहर लावारिस पड़ा मिला था, जिसकी चौदह साल तक अपनी पीठ पर लादकर उसकी तीमार-दारी करते रहे। सन् 1947 में अमृतसर रेलवे स्टेशन पर उन्हें सात और लूले बच्चे मिल गए। भगत जी ने उनको भी अपना-लिया और कोई जगह न मिलने पर वह उनके साथ एक पेड़ के नीचे ही रहने लगे। भगत जी की यह त्रासदी रही कि कई साल तक उन्हें अपाहिजों और लावारिसों को बसाने के लिए कोई पक्का ठिकाना नहीं मिला। वर्तमान पिंगलवाड़ा की स्थापना उन्होंने सन् 1958 में की, जब सरकार की ओर से उन्हें शहर के बाहर जमीन का एक टुकड़ा भेंट किया गया।

यह भगत पूर्ण सिंह जी के पिंगलवाड़े की ही महिमा है कि आज अमृतसर शहर में कहीं लूला, लंगड़ा अपाहिज या लावारिस भीख मांगता दिखाई नहीं देता। खुद भगत जी शहर में किसी भी ऐसे व्यक्ति को देखते तो उसे इज्जत और प्यार से पिंगलवाड़ा ले आते और उसे गैरत तथा सम्मान के साथ जीने की राह दिखाते थे।

गजब की विनम्रता और दीनता थी भगत पूर्ण सिंह जी में। सही मायनों में वह एक सच्चे और पूर्ण कर्मयोगी थे। उनकी निष्काम सेवा का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि बीसियों सेवक होने के बावजूद वह खुद रिक्शा चलाकर बाजार से पिंगलवाड़ा के लिए सौदा-सुलुफ लाया करते थे। जो संस्था महज सवा रुपये से शुरू हुई थी, आज उसका सलाना बजट *सवा करोड़ रुपये को भी पार कर गया है। पंजाब के हर बड़े शहर के रेलवे स्टेशन पर और हर ऐतिहासिक गुरुद्वारे के बाहर पिंगलवाड़ा के **दान-पात्र लगे हुए हैं, जिसमें बड़ी संस्था में लोग अपनी हैसियत के मुताबिक योगदान डालते हैं। पर इसके बावजूद संस्था के लिए धन जुटाने के वास्ते भगत पूर्ण सिंह जी खुद संदूकची लेकर श्री दरबार साहिब (स्वर्ण मंदिर) के बाहर बैठते रहे और आते-जाते श्रद्धालुओं से दान की अपील करते रहे।

मानवतावाद के अलावा भगत जी के जीवन का दूसरा पहलू उससे भी ज्यादा महान् विलक्षण और धार्मिक नेताओं की आंखें खोल देने वाला था। वह था उनका विकासवादी चिंतक, विचारक और प्रचारक का रूप। पिछले बीस सालों से भी अधिक समय से वह लेखों, इश्तहारों, पैम्फलेटों इत्यादि के जरिए लोगों का ध्यान दुनिया की ज्वलंत समस्याओं की ओर भी खींचते आ रहे थे। पर्यावरण प्रदूषण हो या बढ़ती आबादी की समस्या, एटमी तनाव हो या शहरीकरण की खौफनाक चुनौतियां, धार्मिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक जीवन में मिलावट तथा विकृतियों का मामला हो या राष्ट्रीय, अन्तरराष्ट्रीय सम्बन्धों में दरार का मसला—भगत जी ने हर मुद्दे पर देश के अग्रणी अखबारों में छपे प्रमुख लेखों को लघु पुस्तिकाओं के रूप में छापकर हर प्रमुख धार्मिक स्थल के बाहर लोगों में उसे मुफ्त बांटा और सीमित साधनों के बावजूद इन मसलों के प्रति उनका ध्यान आकर्षित करने का कर्म वह

*सन् 2012-13 में संस्था का सालाना बजट 21 करोड़ 80 लाख के करीब है। **अब वे दान-पात्र संस्था की ओर से बन्द कर दिये गये हैं।

आखिरी सांस तक करते रहे। खासकर बिगड़ते पर्यावरण के प्रति भगत जी बहुत चिंतित थे और यहां मैं जिक्र करना चाहूंगा उस चिट्ठी का जो उन्होंने कुछ सप्ताह पहले एक राष्ट्रीय दैनिक (नवभारत टाइम्स नहीं) में विश्व पर्यावरण की स्थिति पर प्रकाशित मेरे लेख से प्रभावित होकर उस अखबार के संपादक को लिखी थी।

चिंतक और कर्मयोगी के अलावा गजब के अध्येता थे भगत पूर्ण सिंह जी। उक्त विषयों के अलावा धार्मिक विषयों पर खुद के लेखों में जिस व्यापकता से उन्होंने आर्नल्ड टॉयनबी, शेक्सपियर, होरेस बुशनेल, जनरल बूथ, व्रिम्बल, वेस्टन मैकडेनियल, सर पर्सि नन्न, टैगोर, कनिंघम जैसे विचारकों और इतिहासकारों को उद्धृत किया है उससे खुद-ब-खुद इस बात का एहसास होता है कि कितना गहरा रहा होगा उनका अध्ययन।

तन, मन और धन से भगत पूर्ण सिंह जी पुरी तरह मानवता की सेवा को समर्पित थे। इसलिए उन्होंने आजीवन विवाह नहीं किया। सेवा उनके लिए लफ्फाजी या कोरा उपदेश नहीं वरन् कर्म और क्रियाशीलता थी। धर्म और धार्मिकता को उन्होंने नई राह दी और कहा, "सही अर्थों में धार्मिक वही है जो सेवा के मैदान में कूदता है। आत्मिक परिपक्वता, परख, और सुधार के लिए दुनिया के सेवा-क्षेत्र में जाना जरूरी है। भले ही सेवा एक उपकार है लेकिन मनुष्य की स्वयं की उन्नति के लिए भी यह बहुत जरूरी है।"

भगत पूर्ण सिंह जी और पिंगलवाड़ा जैसे एक-दूसरे के पर्याय बन चुके थे और किसी एक के बिना दूसरे के अस्तित्व की कल्पना तक नहीं की जा सकती थी। लेकिन पिंगलवाड़ा के रूप में वह अपने पीछे रोशनी की ऐसी मशाल छोड़ गए हैं जिसकी लौ अनगिनत इन्सानों को मानवतावाद की राह दिखाती रहेगी। (नवभारत टाइम्स, 23 अगस्त, 1992)

भगत पूर्ण सिंह जी के निधन से पिंगलवाड़ा 'अनाथ' हुआ

लेखक—शम्मी सरीन

असहाय, अनाथ और अपंगों की शरणस्थली पिंगलवाड़ा इन दिनों उदासी और शोक के वातावरण में डूबा हुआ है। दीन-दुखियों के इस पावन मन्दिर के भगत जी ने जब से इस संसार से विदा ली है पिंगलवाड़ा सूनेपन की भेंट चढ़कर रह गया है। शहर के बीचों-बीच स्थित पिंगलवाड़ा अभागे और तिरस्कृत लोगों की एक पूरी दुनिया है। भगत पूर्ण सिंह जी इसके संस्थापक और संरक्षक ही नहीं थे, वे इस महान् संस्था की आत्मा थे, प्राण थे। आज भगत जी के वगैर पिंगलवाड़ा स्वयं को अनाथ-सा महसूस कर रहा है।

भगत पूर्ण सिंह पूरी उम्र अविवाहित रहे लेकिन अपने पीछे वे एक बहुत बड़ा परिवार छोड़ गये हैं। 755 से ज्यादा सदस्यों के इस विशाल परिवार में कोई विक्षिप्त है, कोई अपंग है, कोई बीमार, तो कोई लाचार। आज ये सभी खामोश और सूनी आंखों से अपने मसीहा को ढूंढ़ते दिखायी देते हैं। भगत जी ने समाज से कटे इन दु:खी लोगों को न सिर्फ भोजन, आश्रय और दवा दी, बल्कि वह स्नेह और सम्मान दिया जो उनके सगे भी उन्हें न दे सके।

रामजी दास से पूर्ण सिंह बने भगत जी हिन्दू पिता और जट्ट (सिख) मां की संतान थे। चार जून, 1904 में उनका जन्म लुधियाना जिले के राजेवाल रोहणों गांव में हुआ, लेकिन शाहूकारा छूट जाने के बाद गरीबी और लाचारी की हालत में उनका अधिकांश बचपन पाकिस्तान के मांटगुमरी लाहौर शहर में ही बीता जहां उनकी विधवा माँ एक डाक्टर के घर बर्तन धोकर घर का गुजारा चलाती थी।

सन् 1934 में, एक चार वर्षीय लावारिस बच्चे की दशा ने उनके जीवन की धारा को ही मोड़ डाला। यह बच्चा गूंगा



भगत पूर्ण सिंह जी के साथ प्यारा सिंह

था और अपाहिज होने के कारण चलने-फिरने और कोई भी दैनिक क्रिया करने में असमर्थ था। रात के अन्धेरे में कोई भला-मानस इस बच्चे को लाहौर के गुरुद्वारा डेहरा साहब की सीढ़ियों पर ठिठुरता छोड़ गया था। गुरुद्वारे के प्रबन्धकों ने इस असहाय बच्चे को अपनाने में असमर्थता जतायी तो भगत जी ने बच्चे को गोद लेकर अनाथों और अपाहिजों की सेवा में ही अपना जीवन लगा देने की प्रतिज्ञा की। यह बच्चा भगत पूर्ण सिंह की अन्तिम सांस तक भगत जी के साथ रहा। आज भी यह बच्चा *63 वर्षीय प्यारा सिंह के रूप में पिंगलवाड़ा में मौजूद है। हालांकि प्यारा सिंह भगत जी के न रहने का गम बोलकर नहीं बता पाता, लेकिन उसकी तड़प उसकी आखों में तैरते आंसू जाहिर कर देते थे।

भगत जी ने जिस पिंगलवाड़े की आज से करीब पैंतालिस साल पहले मात्र दो-अढ़ाई रुपये से एक छोटें से पौधे के रूप में नींव रखी थी, वह आज एक वट-वृक्ष का रूप धारण कर चुका है। इस संस्था का वार्षिक बजट एक करोड़ तक जा पहुंचा है। अनाथ बच्चों, असहाय बूढ़ों, बलात्कार की शिकार महिलाओं, जिन्हें कहीं ठौर नहीं मिलता, भगत जी का पिंगलवाड़ा बिना किसी भेद-भाव ऐसे लोगों को अपनाने के लिए हमेशा बाहें फैलाये रहता है।

भगत जी एक सच्चे पर्यावरणवादी भी थे। पिछले कई सालों से वे स्वर्ण-मन्दिर के मुख्य द्वार पर बैठकर न सिर्फ पिंगलवाड़ा के लिए दान की भीख मांगा करते थे, अपितु लाखों की संख्या में पर्यावरण सम्बन्धी साहित्य की छोटी-छोटी पुस्तकाएं छापकर मुफ्त वांटते थे। ये हर सुबह स्वर्ण-मन्दिर

---

*यह बच्चा 64 वर्ष की आयु भोगकर दिनांक 27 अक्तूबर, 1994 को गुरु चरणों में जा विराजा।



आश्रम के अन्दर लावारिस मरीज जो अपने आपको लावारिस नहीं समझते

जाते समय रास्ते में सड़कों पर बिखरे केले के छिलकों, कागज, पत्थर और कांच के टुकड़ों को उठाते हुए चलते थे। कई बार वे स्वयं रिक्शा खींचकर स्वर्ण-मन्दिर आते। रिक्शे के पिछले भाग में प्यारा सिंह लेटे रहते। शाम ढले वे अपाहिज बच्चों के लिए कोई न कोई फल खरीदना न भूलते, शायद यही कारण है कि आज पिंगलवाड़ा के बच्चों के चेहरों पर रौनक दिखाई नहीं देती।

यह पूछे जाने पर कि भगत जी के न रहने से कैसा महसूस होता है, भरे-मन से तेरह वर्षीय मनजीत कौर बताती है— "ऐसे लगता है जैसे पिता का साया सिर से उठ गया है।" बचपन से ही मनजीत की दोनों टाँगें बेकार हैं। वह पिंगलवाड़ा में कब आयी, कैसे आयी, उसे कुछ याद नहीं, वह कहती है— 'जब से बाबा जी गुजरे हैं, मन ठीक नहीं रहता।' पिंगलबाड़ा में अपाहिज मनजीत को पढ़ाई के साथ-साथ सिलाई-कढ़ाई की शिक्षा भी दी जा रही है। मनजीत के साथ वाले कमरों में अधिकतर लड़कियां ऐसी हैं जो अपना दिमागी सन्तुलन खो चुकी हैं। हालांकि ऐसी लड़कियों को दीन-दुनिया की खबर नहीं रहती, लेकिन भगत जी की विदाई का दर्द इनके चेहरों पर साफ पढ़ा जा सकता है। ऐसी ही एक अभागी लड़की लड़खड़ाती जुबान से कहती है—'बाबा जी बहुत दूर गये।'

भगत जी के निकट सहयोगी रहे सुरजीत सिंह राही भी उनकी मौत के सदमे से घायल नज़र आते हैं। लेकिन उन्हें इस बात का सख्त अफसोस है कि सरकार ने उनके मरणोपरांत उनका उचित सम्मान नहीं किया। श्री राही कहते हैं— 'भगत जी ने तमाम उम्र बिना किसी जातीय भेद-भाव के मानवता की सेवा की। लेकिन हमारी सरकार ने संसद में उनके प्रति शोक प्रस्ताव तक पारित करना मुनासिब न समझा।

(संडे मेल, 30 अगस्त से 5 सितम्बर, 1992)

——0——

ज़हर पीना

लेखक—खुशवंत सिंह

पिछली बार भगत पूर्ण सिंह जी दिल्ली में जब मुझ से मिलने आए तो दसवंध (दान में दिया जाने वाला पंजाबियों का परम्परागत दशांश) लेने और एक धर्मार्थ ट्रस्ट से, जिससे मैं जुड़ा हुआ हूं, कुछ लाख रुपये, उनके पिंगलवाड़ा, कोढ़ आरोग्य केन्द्र, वृद्धाश्रम और अमृतसर स्थित अस्पताल को दिलाने के लिए शुक्रिया अदा करने। भगत जी के बहुत शौक हैं। पर्यावरणीय प्रदूषण पर वे ढेर पुस्तकें और पर्चे लिखते हैं। अचानक वे मेरी ओर मुड़े और पूछा, "अगर आप रेल से अमृतसर आओ तो स्टेशन से पिंगलवाड़ा तक कैसे आओगे ?"

उनके दिमाग में क्या है, बिना यह समझे मैंने कहा, "मैं शायद टैक्सी या स्कूटर लूंगा।"

वह फटकारने लगे, 'यह तो बहुत गलत बात होगी। आपको टांगा या साइकिल लेनो चाहिए, सबसे बढ़िया तो पैदल आएं। आप यह महसूस नहीं करते कि बसों, कारों और स्कूटरों से निकला धुआँ किस तरह वायु को ज़हरीला बना देता और उसी में हम सांस लेते हैं ?'

ये बातें हम सब पहले ही सुन चुके हैं, पर इसे रोकने को कर कुछ नहीं पाते। जब भी मैं दिल्ली में किसी जगह गाड़ियों से अवरुद्ध सड़कों पर जाता हूँ तो उनकी हानिकारक गैसें देख महसूस होता है मैं कितना ज़हर पी जाता हू। कोई वक्त ऐसा नहीं होता जब इस दूषित वातावरण की वजह से मेरे छोटे से परिवार का कोई-न-कोई सदस्य और नौकरों में से कोई गले या छाती की बीमारी से ग्रस्त न हो। पर एक अन्य आगन्तुक ने कुछ आशा बंधाई। ये थीं लास एंजिलिस की एक जिन्दादिल अधेड़ महिला। उन्होंने बताया कि वह सौर व विद्युत

ऊर्जा से चलनें वाली कारों में यात्रा कर चुकी है और अब सिर्फ पानी से निकली हाइड्रोजन से चलने वाली कार के परीक्षण की तैयारियां चल रही हैं। इसमें कोई प्रदूषणकारी गैस उत्सर्जित नहीं होगी। पेट्रोल-चालित कार के दिन अब खत्म होने वाले हैं। अब तक तो विद्यु त-चालित कारें धीमी थीं और कम दूरी तक ही जा पाती थीं। अब वाणिज्यिक प्रयोग के लिए जिन नई कारों का परीक्षण चल रहा है वे 600 मील तक चलती हैं और उसके बाद ही बैटरी को पुनः चार्ज करना पड़ता है। औसतन पेट्रोल की पूरी भरी टंकी से इससे आधी से भी कम दूरी तक ही जाया जा सकता है। नई सफलता बैटरियों को पुनः चार्ज करने के स्थान पर एक घूमने वाले फ्लाई ह्वील के विकास से प्राप्त हुई है। कार के घूमते पहियों का इस्तेमाल डायनेमो की तरह किया जाता है। अनुमान लगाया गया है कि दो सालों में अमरीका पेट्रोल-चालित कारों की जगह ये नई कारें ले लेंगी। इस तरह के प्रतिस्थापना की हमारे यहाँ और भी ज्यादा जरूरत है। वे तो अपना तेल अपने यहां उत्पादित कर लेते हैं या तेल-उत्पादक अरब देशों से खरीद लेते हैं। हम अभी अपनी जरूरत का आधा तेल भी उत्पादित नहीं कर पाते और अपनी कारों, ट्रकों, बसों, स्कूटरों और डीजल इंजनों को चलाने के लिए महंगी विदेशी मुद्रा की बड़ी मात्रा उड़ा देते हैं। मुझे उम्मीद है, हमारे कार निर्माता पेट्रोल की जगह बिजली की कारें बनाना फटाफट शुरू करेंगे। फिर तेल की और खुदाई नहीं, ताजमहल को बिगाड़ने वाली और तेल शोधशालाएं नहीं, जहरीली गैसें छोड़ने वाले वाहन नहीं। ताजी हवा में सांस लेने का अधिकार बहाल करो।

(हिन्दुस्तान, 18 जुलाई, 1992)

दया और प्यार की मूरत भगत पूर्ण सिंह

लेखिका – डॉ. इन्द्रजीत कौर

भगत पूर्ण सिंह बानी पिंगलवाड़ा बे-आसरों का आसरा, निमानों की मान, नितानों की तान, निओटों की ओट, महान् देश भगत का जन्म 4 जून, 1904 को राजेवाल रोहनों, जिला लुधियाना में, पिता श्री शिब्बू मल, माता महिताब कौर के घर हुआ। इनका बचपन का नाम रामजी दास था। दया के संस्कार आरम्भ में भगत पूर्ण सिंह जी को अपनी माता जी से मिले। माता जी भगत जी को राजा जनक, हनुमान जती-सती, भगत भरथरी की कहानियां सुनातीं। वे अपने हाथों से अलग-अलग सेवा के काम करतीं, जिस तरह कुएं में से पानी निकाल कर मुसाफिरों को और गांव के पशुओं के चौने को पानी पिलाना, वृक्ष लगाने, गरीबों को रोटी खिलाना आदि। इन सभी कामों में स्कूल से छुट्टी वाले दिन भगत जी को वे अपनी साथ में लगातीं। रास्ते में से ईंट, कांटा, कांच उठाने की भी प्रेरणा देतीं। क्योंकि भगत जी हिन्दू घर में पैदा हुए थे इसलिए हनुमान चालीसा का पाठ एक टाँग पर खड़े होकर करते, व्रत रखते और ठाकुर-द्वारा में जाकर मूर्तियों को स्नान कराते। अकाल पड़ने के कारण घर में गरीबी आ गई। एक दिन भगत जी जब खन्ना से अपने गांव को पैदल जा रहे थे, रात पड़ गई। भगत जी शिवालय गए। मूर्तियों को स्नान कराया और जब रात को रोटी की घंटी बजी तो भगत जी भी पंगत में जाकर बैठ गए। परन्तु उनको यह कहकर उठा दिया गया कि रोटी केवल यहां के विद्यार्थियों को ही दी जाती है। इसके विपरीत जब भगत जी को गुरुद्वारा रेरू साहिब के गुरुद्वारा में ठहरना पड़ा तो वहां बड़े प्यार से उन्हें खाना खिलाया गया जिसमें खीर भी और रात को आराम करने के लिए बिस्तर भी मिला। कीर्तन से भी भगत जी

बड़े प्रसन्न हुए। दूसरी बार फतेहगढ़ साहिब में महाराजा पटियाला के ए. डी. सी. की पगड़ी बहुत सुन्दर लगी। सारी संगत बिना ऊंच-नीच के भेद-भाव से एक जगह बैठी। इस बात से भगत जी बहुत प्रभावित हुए और रामजी दास पूर्ण सिंह बन गया। इनकी पढ़ाई के लिए माता महिताब कौर को किसी के घर में बर्तन माँजने की नौकरी भी करनी पड़ी। इसलिए भगत जी अपनी स्कूल की विद्या को निरन्तर न रख सके। सन् 1924 में गुरुद्वारा डेहरा साहिब लाहौर में रहने लगे और बिना तनख्वाह से सेवा करने लग पड़े। वहां रहते हुए ही श्री गुरु नानक देव जी के जन्म दिन पर लावारिस बच्चा लूला प्यारा सिंह मिल गया। इसको बाबा जी आखिरी दम तक अपने जिगर का टुकड़ा और गले का हार समझकर पालते रहे। नम्रता की हद देखो—एक बार जब मैंने भगत जी को उनकी ही अपनी फोटो दिखाई और पूछा कि यह किस कि फोटो है ? कहने लगे कि प्यारे के सेवादार की। गुरुद्वारा डेहरा साहिब में सेवा करते हुए भारत की अनेकों समस्याओं से परिचित हुए। गुरुद्वारा डेहरा साहिब में किसी भी यात्री या गरीब को तीन दिन से अधिक खाना नहीं दिया जाता था परन्तु अनेकों गरीब और बेकार तीन दिन से अधिक भी खाना खाने आ जाते तो भगत जी उन्हें चोरी से रोटी खिलाते। दिमाग तीखा होने के कारण बेकारी और गरीबी की समस्या का कारण ढूंढ़ते-ढूंढ़ते दयाल सिंह लाइब्रेरी लाहौर में किताबें पढ़ने लगे और चोटी के विद्वान् बने। वहां ही महात्मा गांधी के विचारों से प्रभावित हुए। खादी पहनना शुरू किया, आखिर तक पहना और उसका प्रचार किया। भगत जी ने किसी किताब में पढ़ा कि हजरत मुहम्मद साहब एक झोंपड़ी में रहते थे और झोंपड़ी के बाहर तीन-चार लूले-लंगड़े या कुष्ठ बैठे रहते थे जिनकी वे सेवा करते थे। इसी बात से ही लंगड़ों, रोगियों तथा अपाहिजों की सेवा

करने की लगन तीखी हो गई। गुरुद्वारा साहिब में रहते हुए गुरबाणी कानों में पड़ती रहती जिससे सब्र, सन्तोष और दया के लिए प्रेरणा मिलती रहती जिस तरह:—

मनि सन्तोखु सरब जीअ दया।।
इन विधि बरतु सपूरन भया।।

बाबा जी की दया की सीमा एक बात से मिलती है—बाबा जी को पता चला कि जूतियां बनाने का बढ़िया चमड़ा तैयार करने के लिए जीवित पशुओं को हंटरों से पीटा जाता है। यह पता चलने पर बाबा जी ने कभी भी चमड़े की जूती न पहनी। सेवा तथा परोपकार के काम करते हुए बाबा जी ने अपने जीवन के चौबीस वर्ष गुरुद्वारा डेहरा साहिब में व्यतीत किए।

लूला

प्यारा सिंह

आयु ६४ वर्ष



सन् 1947 में देश के विभाजन के समय बाबा जी लूले बालक जिसका नाम प्यारा सिंह रखा गया था और एक वृद्ध मरीज

को साथ लेकर अमृतसर पहुंचे। उस समय बाबा जी के पास केवल सवा रुपया था। शरणार्थियों के कैम्प में बीमारों और जरूरतमन्दों की दिन-रात सेवा करते रहते। कुछ महीनों के बाद सरकारी कैंम्प समाप्त हो गया, पर शरणार्थी अभी भी आते रहते। बाबा जी अस्पताल के बाहर बोहड़ (बरगद) के नीचे कोई बीस-पच्चीस रोगियों की सेवा करते। अस्पताल से दवाई लेकर देते, टट्टी वाले कपड़ों की धुलाई करते और गली-गली जाकर रोगियों के लिए रोटियां मांग कर लाते। इतना काम करते हुए वे कभी थकावट महसूस न करते।

प्यारा सिंह की सेवा करने से बाबा जी का हृदय खुश रहता और लोगों से इज्जत भी मिलती। एक बार डॉक्टर रोशन लाल चोपड़ा के पास किसी रोगी को लेकर गए, उसने बाबा जी को कहा कि जब हमें पता चला कि आप एक लूले बालक को सम्भाल रहे हैं तो मेरे दिल में आप के लिए इज्जत बहुत बढ़ गई। भगत जी को एक मुसलमान भिखारी के गीत के साथ भी बड़ी सन्तुष्टि होती थी, जिसके शब्द थे –

परां वाले उड़ गए बेपरां दा खुदा
यहां से न पा वहां से ही पा।

हमारे देश में बेसहारा कोढ़ियों, लुले और लंगड़ों को कोई जगह नहीं। वे सड़क पर लुढ़कते रहते हैं जो हमारे देश पर बहुत बड़ा कलंक है। भगत जी ने पिंगलवाड़ा संस्था बनाकर हमें यह कलंक दूर करने के लिए एक रास्ता दिखाया। हमारे देश में कोई दो करोड़ पागल हैं और अस्पतालों में पागलों के लिए केवल बीस हजार रोगियों को दाखिल करने की समर्था (capacity) है और दाखिल भी केवल वहीं किए जाते हैं जिनका कोई रिश्तेदार हो। लावारिसों को तो सकड़ों पर ही लुढ़कना होता है। मानवता की सेवा करने का एक नए ढंग

का बीज बाबा जी नें बोया है। छोटा-सा पौधा है यह पिंगलवाड़ा जिसकी आयु 64 वर्ष की है। आशा है कि अपाहिजों, लूले-लंगड़ों की सेवा करने में यह सबसे आगे होगा। इस समय पिंगलवाड़े में भिन्न-भिन्न किस्म के 1662 मरीज हैं जो कि अपना काम भी नहीं कर सकते। पिंगलवाड़े का रोजाना खर्च चार लाख रुपए है। भगत जी के बारे में लोगों ने भिन्न-भिन्न विचार प्रकट किए हैं, पर मैं महसूस करती हूँ कि भगत जी उससे भी कहीं अधिक ऊंचे थे, क्योंकि भगत जी ने किसी धर्म के विस्तार के लिए यह काम नहीं किया बल्कि पूरी मानवता की सेवा करके भगवान् को निःसन्तान (बे-औलाद) होने से बचाया है; जैसे कि गुरबाणी में लिखा है—

सफलु जनमु हरि जन का उपजिया
जिनि कीनो सऊतु विधाता॥

दान से सुख

उपनिषद्कालीन के एक उपाख्यान से पता चलता है कि जब मनुष्य दान करना छोड़ देता है तो उसके पास आवश्यकता से अधिक सम्पति जमा हो जाती है। फलतः या तो वह इन्द्रियलोलुप देवता बन जाता है या फिर दयाहीन राक्षस। एक बार देवता, मनुष्य और राक्षस तीनों ने अपने सुख के लिए प्रजापिता ब्रह्मा जी से उपदेश की याचना की। ब्रह्मा जी ने तीनों सुखार्थ संयुक्त रूप से 'द' का उपदेश दिया। इससे देवताओं ने 'द' से इन्द्रिय मन के द्वारा, मनुष्यों ने 'द' से दान के द्वारा और राक्षसों ने 'द' से दयाहीनता के द्वारा सुख प्राप्त किया। आज भी यदि मनुष्य आवश्यकता से अधिक जमा धन का दान करता रहे तो जीवन में निरन्तर सुख बना रह सकता है।

—डॉ. लेखराम शर्मा

अद्‌भुत प्यार का मसीहा

अद्‌भुत प्यार के मसीहे को कोटि-कोटि नमस्कार।

मुरदा होए मुरीदु न गली होवणा।
साबरु सिदकि सहीदु भरम भउ खोवणा।
गोला मुल खरीदु कारे जोवणा।
ना तिसु भूख न नींद न खाणा सोवणा।

भाई गुरदास जी की ऊपर दी गई 'वार' जब किसी के हृदय में वस जाती है तब वह मनुष्य को सेवा—कांटों भरे रास्तों पर, विना भूख, प्यास, नींद की परवाह किये बिना, थकावट को न महसूस करते हुए, किसी दूर तथा अपार धनी गुरसिखी की मंजिल पर चला देती है तथा मानव दैवी गुणों का मालिक प्यार से ठाठें मारता हुआ हृदय रखने वाला, दूसरों के रोने को हंसी में बदलने वाला, एक फकीर, एक मसीहा, भगत पूर्ण सिंह वन जाता है। इस तरह ही जब यह श्लोक भगत जी के रोम-रोम में बस गया तो भगत जी की जिन्दगी के अट्‌ठासी वर्ष भूख-प्यास, गर्मी, सर्दी की परवाह किए बिना लावारिस मरीजों की सेवा करते हुए तथा हाथ में घंटी पकड़कर तथा 'सत्‌नाम' की आवाज लगा कर गलियों में रोटी इकट्‌ठा करते हुए, पल-पल मरीजों के रहने की जगह का फिक्र करते हुए, ईश्वर का स्मरण करते हुए, नंगे पांव 'प्यारे' को मीलों-मील कंधों पर उठा कर, भाई कन्हैया जी के पथ पर चलते हुए व्यतीत हो गए।

इस अद्‌भुत प्यार के मसीहे का बचपन का नाम रामजी दास था। माता महिताब कौर जी ध्रुव भगत, हनुमान जती-संती, शिवजी महाराज तथा राजा भरथरी भगत जैसे अनेकों महात्माओं की कहानियां सुनाया करती तथा निरन्तर सारा दिन सेवा में व्यस्त रहती तथा परोपकार के कामों

की प्रेरणा देतीं। भगत जी के मन में यह संस्कार दृढ़ कर दिये कि ईश्वर एक है, वह सबको पालने वाला है, सारी दुनिया के जीव उसके ही बनाए हुए हैं। जो भी मानव इन जीवों की सेवा करेगा, वह ही परमात्मा को खुश कर सकता है तथा उसको पा सकता है। हिन्दू संस्कारों में पले हुए रामजी दास हनुमान चालीसा का पाठ करते, ठाकुरों (मूर्तियों) को स्नान कराते और इसी कार्य को अपना कर्त्तव्य बना लिया। रेरू साहिब गुरद्वारा में व्यतीत की हुई एक रात ने रामजी दास को पूर्ण सिंह बना दिया। यह है गुरुद्वारे के लंगर की पंगत में बैठकर प्रसादा छकने का महत्व। सामाजिक हालातों के कारण भगत जी दसवीं कक्षा के पश्चात् अपनी पढ़ाई को निरन्तर न रख सके तथा लाहौर के एक सरदार हरनाम सिंह की प्रेरणा द्वारा भगत जी ने गुरुद्वारा डेहरा साहिब को अपना घर, अपना ईष्ट, अपना विद्यालय, सब कुछ बना लिया। चौबीस साल निरन्तर लंगर की, जोड़ों (जूतों) की, यात्रियों को वस्त्र (बिस्तरे) उपलब्ध कराने की, बर्तन मांजने की निष्काम सेवा की। वाणी हर समय कानों में पड़ती ही रहती थी। नीचे लिखे शब्दों ने भगत जी की जिन्दगी पर जादू जैसा असर किया।

सेव कीती संतोखीईं जिन्ही सचो सच्च धिआइया।।
ओन्ही मन्दै पैरु न रखियो करि सुक्रितु धर्म कमाया।।
ओन्ही दुनिया तोड़े बन्धना अन्नु पाणी थोड़ा खाया।।

गुरुद्वारा डेहरा साहिब में चार साल का लूला 'प्यारा सिंह' भगत जी को मिल गया जिसने भगत जी की आंखों के सामने अपने जैसे अनेकों अपाहिजों की समस्या खड़ी कर दी। जिसका समाधान ढूंढ़ने के लिए भगत जी के अन्दर से आवाज आई। इस समस्या का हल ही पिंगलवाड़े का बीज-रूप था। जिसके आधार पर आज पिंगलवाड़ा बना जो कि अब 1700 के करीब लावारिस

रोगियों, अपाहिजों, पागलों की छत्र-छाया बना हुआ है।

पिंगलवाड़े को बीज-रूप से घनी छाया देने वाले वृक्ष बनाने तक का सफर जो भगत जी ने तय किया, वह भगत जी की मृत्यु के पश्चात् उनकी पुरानी तस्वीरें देखने से पता चलता है। तस्वीरें देखते ही दोनों आंखें गंगा-यमुना बन जाती हैं तथा मस्तक श्रद्धा, सत्कार, प्यार के साथ बार-बार झुक जाता है।

भगत जी अनुभव करते थे कि विश्व के सामने तीन तरह की चिन्ताजनक समस्याएं हैं—सामाजिक, आचरण तथा वायुमंडल। आज की शिक्षा प्रणाली में सबसे गलत सोच हाथ से काम करने से मुंह मोड़ना है। हाथों द्वारा कार्य न करने के साथ जो हानि होती है वह ब्रह्मज्ञानी 'थोरो' ने इस तरह से ब्यान किया है—"यत्न से जन्म लेती है समझदारी तथा पावनता; आलस्य से जहालत तथा इन्द्रीय-भावनाएं। अपवित्र मनुष्य हमेशा आलसी होता है जो चूल्हे के पास बैठता है, जिस पर बैठे हुए पर ही सूर्य अपनी रोशनी फेंकता है, जो बिना थके ही आराम करता है। यदि आप अपवित्रता तथा सभी पापों से बचना चाहते हैं तो संजीदगी से अर्थात् तन-मन से काम करें, चाहे वह काम तबेले को साफ करना ही क्यों न हो। काम-वासना का सांप मनुष्य से दूर नहीं रहता बल्कि उसके तन के कपड़ों में ही छिपा रहता है तथा अपनी कमीज की कलाई उस सांप की बरमी समझनी चाहिए। काम का यह सांप कमीज के बाजू की बरमी में से आदमी पर अपना वार करने के लिए तभी बाहर निकलता है जब उसके हाथ खाली हों और वह बेकार हो।" यह विचार भगत जी ने किताबचों तथा इश्तहारों के रूप में प्रत्येक युवक-युवती तक पहुंचाने की कोशिश की है।

भगत जी कहा करते थे कि किसी भी देश की तीन समस्याएं होती हैं: बेकारी, अनपढ़ता तथा बढ़ रही आबादी।

भगत जी महात्मा गाँधी जी की पत्रिका (Young India) लाहौर दयाल सिंह लाइब्रेरी में जाकर पढ़ते थे, जहां पर उन्होंने बेकारी दूर करने का हल ढूंढ़ा। उन्होंने कहा—हमें ऐसे काम अपनाने चाहिए जिनसे अधिक से अधिक लोगों को काम मिल लके। जिस तरह खद्दर बुनना, कारखानों के स्थान पर छोटी घरेलू दस्तकारियों के कार्यों को अपनाना आदि। इसलिए उन्होंने लोगों को खद्दर पहनने के लिए प्रेरित किया। मुझे उन्होंने इस तरह समझाया—"जब भी आप पैसा खर्चों, आपके मन में यह विचार आना चाहिए कि यह कमाई गरीब आदमी तक अवश्य पहुंचनी चाहिए। इसलिए यदि आप कारखाने का बनाया हुआ कपड़ा पहनेंगे तो आपका खर्च किया हुआ पैसा एक धनी आबादी के पास पहुंचेगा। सूत कातना तथा खद्दर बुनने का काम तो अक्सर गरीब आदमी घर बैठे ही कर लेते हैं। यदि हमारे देश के बहुत से लोग खद्दर पहनने का प्रण कर लें तो वे बेकारी दूर करने में मदद कर सकते हैं।" भगत जी ने पिंगलवाड़े के मरीजों को अस्पताल में ले जाने के लिए हाथों द्वारा खींचने वाली रेहड़ियां बनवाईं ताकि वे अधिक से अधिक लोगों को रोजगार दे सकें। यही कारण है कि उन्होंने अपने छापे-खाने में भी वैसी ही मशीनें लगाईं जिनको चलाने में ज्यादा से ज्यादा लोगों की जरूरत पड़े।

माताओं को अक्सर प्रेरणा देते कि वे अपने बच्चों को धर्म-ग्रन्थ पढ़ाएं तथा उन्हें टी. वी., सिनेमा और इस तरह की गन्दी वस्तुओं से दूर रखें। अक्सर ही भगत जी यहूदियों की उदाहरण देते कि जब यहूदियों की गिरावट हुई तो उन्होंने फैसला किया कि वे अपने लोगों को प्रतिदिन दो घण्टे धर्मग्रन्थ पढ़ाएं। इसी तरह से वे कम गिनती की कौमों को समझाते कि यदि वे अपने अस्तित्व को कायम रखना चाहते हैं तो उन्हें संसार में

बाकी लोगों से ज्यादा गुण धारण करने पड़ेंगे।

भगत जी प्रतिदिन भारत की लगभग सभी अखबारों तथा पत्रिकाएँ पढ़ते जैसे पंजाबी, हिन्दी तथा उर्दू की अखबारों के अलावा स्टेट्समैन (दिल्ली), हिन्दू (मद्रास), अमृत बाजार पत्रिका (कलकत्ता), नागपुर टाइम्स, इलस्ट्रेटड वीकली, आर्गेनाइजर, ट्रिब्यून, इण्डियन एक्सप्रेस, सरिता, सारिका, भवन जनरल, हैल्थ, मुक्ता आदि। इनमें वे वैज्ञानिकों के खोज भरे लेख पढ़ते जिनमें मानवता की समस्याओं के हल होते, जिस तरह वायुमण्डल में कार्बन डाई ऑक्साइड का बढ़ना, ग्रीन हाउस ऐफेक्ट तथा ओज़ोन गैस का ब्रह्माण्ड पर घेराव तथा उसका क्लोरो-फ्लोरो-कार्बन जैसी गैसों से खराब होना और मनुष्य कौन-कौन से तरीके अपना-कर वायुमण्डल को साफ रख सकता है। इसलिए वे प्रेस में ऐसे लेख इश्तहारों के रूप में छाप कर लोगों में मुफ्त बांटते। कालेजों, स्कूलों में लैक्चर करते और नौजवानो को यह प्रेरणा देते कि वे अपने अहंकार को बढ़ावा देने के लिए पेट्रोल तथा डीजल से चलने वाली गाड़ियों को प्रयोग करने से संकोच करें।

एक बार भगत जी जब संगरूर आए तो हमारे घर मैं चिट्ठी लिखी और उसमें अपनी नाराजगी प्रगट की। चिट्ठी के अंश इस तरह हैं: "लोग दान-पुण्य न करते हुए चोरी, झूठ, रिश्वत, मिलावट और बुरे कर्म करते हुए पैसा इकट्ठा करते हैं और अहंकार के प्रगटावे में खर्च करते हैं जिनमें से स्कूटर का चलाना भी अनेक व्यक्तियों के लिए अहंकार का प्रगटावा ही होता है। तेरे भाई को स्कूटर चलाने का जो चाव है, वैसा ही चाव औरों को है और मुझे इस बात पर एतराज है कि आपके घर के लड़के-लड़कियां दूसरों की तरह अहंकार का प्रगटावा

करने के लिए स्कूटर चलाएं।"

वायुमंडल को साफ रखने के लिए भगत जी ने स्वयं अपने हाथों द्वारा वृक्ष लगाए तथा उनकी पालना की तथा लोगों को वृक्ष लगाने के लिए प्रत्येक विधि द्वारा प्रेरणा दी।

भारत का सभ्याचार हमें तीन बातों के लिए प्रेरित करता है—दया, दमन तथा दान। भगत जी ने इन सभी बातों का प्रचार किया तथा बढ़ती हुई आबादी को रोकने के लिए नसीहत दी। यह तो प्रत्यक्ष ही है कि भगत जी गरीबों तथा समाज द्वारा कुचले हुए लावारिसों के साथ गहरी साँझ रखते हुए, ईश्वर को श्वास-श्वास याद करते थे तथा मेरे जैसों को भी इस पथ पर चलने के लिए अपना पूरा जोर लगा देते थे, जिसका पता उनकी लिखी हुई एक चिट्ठी के वाक्यों द्वारा लगता है —"आप को मेरी धी (पुत्री) बनने के लिए बैरागिन बनना पड़ेगा। आप वाणी पढ़ने में कभी नागा मत डालना। बाहर भी जाएं तो ऐसे ही गरीबों जैसे खद्दर के कपड़े पहनकर जाएं। हमने बैराग को तथा नम्रता को अपनाना है।"

"नीचा अंदरि नीच जाति नीची हू अति नीचु॥
नानकु तिन कै संगि साथि वडिआ सिउ क्या रीस॥"

मेरे जीवन का लक्ष्य वैराग है। तप द्वारा ही जीवन गुजारना किस्मत वाला बनना होता है। फिर मैं चाहता हूं कि खद्दर पहना जाए, कपड़े प्रतिदिन न बदलाए जाएं, न ही दूध जैसे सफेद कपड़े हर समय रखे जाएं, ये अमीरों की निशानियां हैं। हमने अपना मेल-मिलाप गरीबों से रखना है।

"विश्व में सबसे मुश्किल घड़ी वह है जब आप दीवानगी की हद तक परोपकार के कामों में जुड़े हों, जिस तरह कि गोबर आदि सड़क से उठाकर खेतों में पहुंचाना, सड़कों पर से केले

के छिलके, कंकड़, कील आदि उठाना। मेन-होल के ढक्कन खुले हों तो उनके पास ही दिन-रात खड़े होकर पहरा देना और फिर जब लोग आप पर हंसें तो उस समय आप न घबराएं तथा ईश्वर के शुकराने में रहें तो वाहिगुरू आपकी झोलियां अपनी कृपा द्वारा भर देता है।

इस तरह का समय भगत जी ने अपने जीवन-काल में गुजारा है तथा मुझे इस पथ पर चलने के लिए प्रेरित किया तथा ताकत दी है। एक और पत्र के कुछ अंश जो भगत जी ने मुझे तराशने (बनाने) के लिए लिखे वे इस तरह हैं—

"ईश्वर मेरी अन्तिम सांस तक आपको मेरे सिर पर रखे। मैं जीवन सेवा में निभा दूं, मेरा कोई नहीं पर आपने वाहिगुरू की ओर से मेरे तथा 'प्यारे' के बीच खड़ी होकर हमें लावारिस नहीं रहने दिया। संगरूर में मैंने तुझे यह बात कही थी कि मैं मरते समय तुझे यह बात कहूं कि तुझे ईश्वर ने मेरी मां के स्थान पर मेरे सिर पर खड़ा करके तलवार की धार पर चलकर प्राणीमात्र की सेवा करने के लिए प्रेरित किया।"

भगत जी जब एक बार (Prostate gland) प्रोसटैट गलैंड के आप्रेशन के लिए अस्पताल में दाखिल हुए तो मैं उनके पास अस्पताल में सेवा करने के लिए रही क्योंकि मेरे पिता जी के इस संसार से चले जाने के बाद भगत जी ने पिता वाला अशीशें-भरा हाथ मेरे सिर पर रखा हुआ था। पुत्री होने के नाते मैंने आना ही था। दूसरा लालच यह था कि एक भगत जी की सेवा करके मुझे 1461 लावारिसों की अशीशें प्राप्त होगीं। परन्तु भगत जी ने तो परमात्मा के शुकराने वाली हद कर दी जिसका पता उनकी इन पंक्तियों से मिलता है। श्री गुरु-ग्रन्थ साहिब में श्री गुरु अर्जुन देव जी का शब्द है, "पाइयो बाल बुध सुखरे।" "मैं बाल हृदय से जीवन गुजारता रहा। मेरा हृदय

अधिक गहराई से परमात्मा की भक्ति में लगा रहा है परन्तु मेरे हृदय को और कोई नहीं समझ सकता, मेरी भक्ति के नतीजे के तौर पर परमात्मा के दर्शन होने चाहिए। परमात्मा को यह प्रवान हुआ दिखाई देता है। मैं परमात्मा के कामों में आंसू लाने वाले कष्ट उठाता रहा हूं। परमात्मा की ओर से उसकी मेहर भी इतनी होनी चाहिए कि मैं शुक्रिये में रोता रहूं। वह चमत्कार ईश्वर ने मुझे दिखाया है, बीबी डॉ. इन्द्रजीत कौर के रूप में। मुझे परमात्मा ने यह चमत्कार दिखाया है जिसको मैं परमात्मा-दर्शन समझता हूं। इससे अधिक कृपा की मैं परमात्मा से आशा नहीं कर सकता था। मैं एक दम भरा पड़ा हूं। परमात्मा की उस दया-दृष्टि से बीबी तो मेरी नज़र में नौ साल की लड़की है। मेरा ख्याल है कि वह प्यारा सिंह लूले की मेरी सेवा में आधेपन की अधिकारी बन चुकी है।"

भगत जी ने अपनी जिन्दगी में गुरु नानक देव जी की तरह कंकड़ों का रास्ता अपनाया। जहां भी किसी जरूरत मन्द को देखते, अपने हिस्से का लंगर भी खिला देते तथा अपने कपड़े भी उतार कर उसे दे देते। इस तरह वे परोपकार के कठिन रास्ते पर चलते हुए जिन्दगी को खुशी से व्यतीत करते रहे।

इस प्रकार से भगत जी ने मुझे कई साल मेहनत करके एक सांचे में डाला तथा पिंगलवाड़े की सेवा का भार मेरे निमाने कन्धों पर डालकर शारीरिक-तौर पर विछोड़ा भी दे गये। दिल चाहता है कि जो बूटा परोपकार का भगत जी ने पिंगलवाड़े के रूप लगाया, इसके बीज जगह-जगह फैलें, इस तरह के और परोपकार जीव पैदा हों, जो भगत जी के दरसाए हुए रास्ते पर चलें तथा औरों के लिए प्रेरणा-स्रोत बनें। बीस वर्ष बीत चुके हैं पिंगलवाड़ा में सेवा करते हुए और जो

उत्साह प्यार तथा सहयोग मुझे गुरु प्यारी साथ-संगत का मिलता है इसके लिए मैं अकाल पुरुख का कोटिन-कोटि धन्यवाद करती हूं। कई मेरे भाई-बहन और बुजुर्ग भगत जी के इस कार्य को आगे ले जाने के लिए रात-दिन फिक्र में रहते हैं। धन्यवाद है बाबा कर्म सिंह 'समरौली' वालों का जिन्होंने भगत जी की दूसरी बरसी के समय पर 450 के करीब फल देने वाले वृक्ष लगाकर भगत जी की याद में एक बाग ही बना दिया। इसके अलावा वस्त्रों और अनाज के रूप में सेवा की। बीबी अविनाश कौर, जीतेन्द्र कौर, सरदार गुरबख्श सिंह सिविया, बीबी चन्दन कौर—बहुत दूर बैठे हुए भी माया इकट्टी करके भेजते हैं। कई बार गुप्त सेवा करते हैं। पिंगलवाड़े के सोसायटी सदस्य और समूह सेवादार जिस तनदेही और लगन से संस्था की सेवा निभा रहें हैं वह सराहनीय है।

अन्त में मैं न केवल उस परमात्मा रूप ज्योति, मानवता के मित्र, परोपकार के सच्चे आशिक, गरीबों के वारिस, प्यार के चश्मे को ही, जिसने आपने आप को गंवा कर निम्र रहते हुए मानवता की हर प्रकार से सेवा की, बल्कि मैं तो हर उस इन्सान को, जो मानवता को प्यार करता है, उसको रोम-रोम से लाख-लाख बार नमस्कार करती हूं।

—डॉ. इन्द्रजीत कौर,
प्रधान,
आल इण्डिया पिंगलवाड़ा चैरीटेबल सोसायटी (रजि.)
जी. टी. रोड, अमृतसर।

गुरुद्वारा डेहरा साहिब लाहौर के आगे सन् 1934 में लावारिसी की हालत में छोड़े गये एक पिंगले बालक बारे

"मां के हृदय का विश्व में विशेष स्थान"

Nature's loving proxy, the watchful mother.

—Bulwar.

God could not be everywhere, and therefore,
He made mother. —A Jewish saying.

सन् 1934 में एक लूले बालक के मेरे पास आने से पहले मैं सुबह के समय साइकिलों की रखवाली किया करता था। मैंने लूले बच्चे को उस समय उठाया था जब ईंटों की खुरदरी धरती पर उसे अकेले उल्टे घुटने टेके दस्तों की ढेरियाँ बनाते हुए को देखते दूसरा दिन हो गया था। उसे उठाने से पहले कुछ दिन मैं उसका एक मानसिक दुःख यह देखता रहा था कि वह दिन के समय उल्टे घुटने टेके बैठा होता और जब भी सेवादारों के पांच-सात बच्चों की एक टोली उसके पास आती तो वह उनके साथ खेलने के लिए उनमें से किसी एक की कलाई पकड़ने का यत्न करता। परन्तु वे बच्चे अपनी कलाई छुड़ाकर भाग जाते। मैं अपनी माँ के हृदय में ममता का अथाह सागर मौजें मारते हुए देखा था और लूले की इस लाचारी की झांकी मेरे हृदय को दुःख से छलनी कर दिया करती थी। मुझे यह बिल्कुल भी अनुमान नहीं था कि जल्दी ही कोई ऐसा कारण मेरे हृदय में पैदा हो जाएगा जिससे मुझे उस लूले बालक को स्वयं ही सम्भालना पड़ेगा और उसकी हर लाचारी का इलाज भी मुझे स्वयं को ही बनना पड़ेगा।

लूले बच्चे को सम्भालने के बाद मैंने साइकिलों की ड्यूटी पूरी तरह सम्भाल ली क्योंकि सर्दी के दिनों में वह बच्चा धूप निकलने से पहले और बाद में सर्दी से बचने के लिए मेरे पैरों पर ही लेटता और गोदी में बैठता था। लूले बच्चे पर मुझे हर समय नज़र रखने की जरूरत थी। सबसे बड़ी समस्या

उसके टट्टी-पेशाव की थी क्योंकि उसे उठा कर ही पेशाव करवाना पड़ना था और उठा कर ही टट्टी करवानी पड़ती थी। गूंगा होने के कारण उसने अपने हाथों के इशारों से ही टट्टी-पेशाब करने के बारे में बताना होता था। वह उठकर पानी पीने के लिए नहीं जा सकता था। यदि किसी कारण-वश लूला बच्चा गुरुद्वारे के पीछे खुली जगह खेल रहा होता तो मैं वहां उसका एक मिनट का भी भरोसा नहीं कर सकता था क्योंकि लंगर के लिए लकड़ियाँ और राशन ले जाने वाले ठेले बड़ी तेजी के साथ उसी रास्ते से गुजरते थे जहां वह लूला बच्चा खेल रहा होता था और उसका ठेलों के नीचे आ जाने का भारी खतरा रहता था। वह न तो आवाज लगाकर ठेले वालों को यह कह सकता था कि मैं लूला हूं और न ही वहाँ से स्वयं उठकर दूर हो सकता था।

साइकिलें जमा कराने वालों में से स्थानीय गवर्नमैंट कालेज के एक विद्यार्थी ने लूले को खेलते हुए देखकर मुझे बताया कि उनके बी. ए. आनर्स श्रेणी के प्रोफेसर डिकिनसन ने विद्यार्थियों को एक प्रश्न किया कि अंग्रेज कवि 'कीटस' की कविता के अनुसार संसार में 'सबसे बढ़कर चिंता से भरा हुआ कौन-सा मनुष्य है?' विद्यार्थी ने वताया कि किसी भी विद्यार्थी की ओर से सही जवाव न मिलने पर प्रोफेसर साहब ने उनको उत्तर दिया कि 'कीटस' की कविता के अनुसार "मानव जाति में सबसे बढ़कर चिंता-भरा वह बच्चा है जिसे न कोई हंसाए और न ही उसके साथ कोई खेले। भले ही कपड़ा आदि तथा वेसुमार धन-दौलत वाली कई जरूरतें पूरी क्यों न होती हों।" मेरे दिल को 'कीटस' कवि की वह बात छू तो जानी ही थी क्योंकि किसी आत्म-दर्शी प्रसिद्ध विद्वान की कही हुई यह बात मेरे लिए इस लूले बच्चे की सेवा-सम्भाल के कार्य के सम्बन्ध में एक 'वधाई' से कम हैसियत नहीं रखती थी।

मेरे हृदय में यह बात कई सालों तक रही कि मैं डिकिनसन साहब की कोठी जा कर उनके कथन की दलीलें उनसे पूछूँ। डिकिनसन साहब के पास जाने का अवसर अपनी पैदल चलने की आदत और अपने अनेक व्यस्तमई कार्यों के कारण न मिल सका। परन्तु अंग्रेजी रसालों को पढ़ने की अपनी लगन से मुझे स्वयं ही इस कथन की कई दलीलें मिल गईं। सबसे बड़ी दलील तो मुझे निम्नलिखित अंग्रेजी की इस कहावत से मिली—

Children live proverbially in the present.

अर्थात्—बच्चों के हृदयों में सदा वर्तमान समय का ख्याल होता हैं। चाहे वे खेल रहे हों, रोटी खा रहे हों, लड़ रहे हों। केवल इस बात का ध्यान ही उनके मन में होगा जो कि वे कर रहे हैं। वर्तमान में उनके साथ बीत रही बात के अतिरिक्त और कोई भी बात न तो बीते समय में और न ही आने वाले कल की कोई बात उनके ध्यान में आती है। केवल चल रहे समय का ध्यान रखने वाला बच्चा बड़ी आयु के व्यक्ति से, जो अपने बीत चुके समय की बातों को भी दिल में रखा करता है और आने वाले समय की अनेक कल्पनाओं की कल्पना भी करता है, क्योंकि वह केवल इस कारण से बहुत ही चिन्तातुर हो जाया करता है कि उसका चल रहा समय हंसने-खेलने जैसे दिल बहलाने की मिन्नत से खाली है। इस बात की महान् व्याख्या मुझे अमरीका के मासिक-पत्र रीडरज डाईजैस्ट (Reader's Digest) में मिली—

The remembrance of beauty, the beauty of a thing of personal relasionship is the chief end of my life. The present cannot be held. It passes through our grasping fingers and become immediately the past. The future is bound of be accompanied with tragedy and ugliness, but what has happened is ours and cannot be taken away from us. The mind

like the gauze-screen transmutes almost everything into loveliness.

अर्थात्–सुन्दरता की याद, किसी वस्तु की सुन्दरता या किसी व्यक्ति के साथ रहे निजी सम्बन्ध की सुन्दरता को याद रखना ही मेरे जीवन का सबसे बड़ा मनोरथ है। गुजरता जा रहा समय पकड़ा नहीं जा सकता; यह उन उंगलियों से निकल जाया करता है जो उसे कसकर पकड़ने की कोशिश कर रही होती हैं और उसी समय यह 'गुजरा हुआ कल' बन जाया करता है। भविष्य का कुरूप और दुखाँत के साथ मिलकर आना एक जरूरी बात है पर जो कुछ बीत चुका है वह तो हमारा है और उसे हमारे पास से छीना नहीं जा सकता। तथा मनुष्य का मन प्रायः हर बात को अपनी स्मरण-शक्ति के जालों में से निकलता हुआ मन-मोहनी बना लिया करता है।

अंग्रेजी की एक और निम्नलिखित कहावत है–

Memories are treasures which no one can steal. Death leaves a heartache which no one can heal.

अर्थात्–यादें खजाने हैं जिनको कोई चुरा नहीं सकता। मृत्यु दिल में ऐसी जलन छोड़ जाती है जिसकी कोई चिकित्सा नहीं कर सकता।

प्रौढ़ व्यक्ति के जीवन में अनेक ऐसे अवसर आते हैं जो बेहद खुशियों वाले होते हैं। ऐसे अवसर थोड़े समय के लिए भी होते हैं और लम्बे समय के लिए भी। लम्बे समय वाली खुशियाँ माँ-बाप से प्रतिदिन मिलने वाले प्यार का समय ही हो सकता है–बेटे-बेटियों, बहनों-भाइयों, पत्नी, मित्रों से मिलने वाला प्यार का समय हो सकता है, किसी संत-महात्मा से मिले प्यार का समय हो सकता है। किसी व्यक्ति ने अपनी किसी कला से मान-सम्मान प्राप्त किया हो जैसे किसी व्यक्ति ने रागी बनकर लाखों लोगों से मान-सम्मान प्राप्त किया हो, किसी ने अपनी पहलवानी से लाखों लोगों की उपस्थिति में कुश्ती

लड़कर मान प्राप्त किया हो, ऐसी खुशियां प्राप्त करने वाले व्यक्तियों में से यदि किसी को जीवन में किसी समय कोई ऐसा जख्म हो जाए जो भयानक हो और ठीक होने वाला भी न हो, या वह किसी ऐसे रोग से ग्रस्त हो जाए जो ठीक न हो सकता हो, उस रोग के लम्बे समय की निराशाजनक हालत में वह व्यक्ति प्रतिदिन अपने मन में उन अनेक यादों को याद कर सकता है जो उसके जीवन में भारी खुशियाँ वाली हों। इसी तरह एक प्रौढ़ व्यक्ति को आने वाले समय में अनेकों आशाएँ होती हैं, जैसे अपने बेटों की अपनी गरीबी की हालत में पालन-पोषण कर रहे एक बाप को आशा होती है कि जब उसके बेटे जवान हो जाएँगे तो वे उसको ज्यादा धन-दौलत कमा कर देंगे। परन्तु बच्चे का मन तो हर समय उस खेल में लगा रहता है जिस खेल को वह खेल रहा होता है। यदि किसी बच्चे के सामने रौनक-मेला न हो, उसके साथ कोई बात-चीत न कर रहा हो और न ही उसको खेला रहा हो तथा वह बच्चा चुप-चाप ही बैठा हो तो वह अपनी खामोश अवस्था में एक प्रौढ़ व्यक्ति की भांति न किसी बीत चुके समय की किसी खुशी को याद करके अपना मन बहला सकता है और न ही आने वाले समय की किसी खुशी की आशा को लेकर दिल बहला सकता है। इसलिए उसका हर पल, मिल रही खुशियों से भरपूर होना चाहिए।

I love these little people, and it is not a slight thing, when they who are so fresh from God, love us.

—DICKENSON

अर्थात्—मैं इन छोटे बच्चों को प्यार करता हूं, और यह कोई साधारण बात नहीं कि ये बच्चे जो परमात्मा के पास से ताजे-ताजे ही आए होते हैं, वे हमें प्यार करते हैं। —डिकिनसन

कालेज के विद्यार्थी से डिकिनसन का कथन सुनकर मेरे मन को यह भरोसा तो हो गया था कि धरती पर अपना डेरा लगा कर मैं लूले बच्चे की सेवा-सम्भाल का जो कार्य कर रहा हूं उस कार्य की बदौलत मैं खुदा की खुदाई को धरती पर उतार लाया हूं जो मेरे दिल को छू लेने वाले नज़ारे मुझे उस समय दिखलाया करती है जब लूला बच्चा उल्टे घुटने टेके रेत वाली जगह पर बैठा होता है और अपने दोनों हाथों में रेत उठा कर और बाँहें ऊँची करके उस रेत को अपने दोनों हाथों के बीच से धरती पर बिखेरता हुआ मस्ती भरी खुशी के साथ मुंह से कुछ बुदबुदाता है। इस लेख के शुरू में मैंने अंग्रेजी भाषा के जो दो कथन दिए हैं जिनमें से एक का भावार्थ यह है कि परमात्मा, जो हर जीव को पैदा करने वाला है उसने हर बच्चे के पालन-पोषण के लिए अपनी असमर्थता समझते हुए अपनी जगह पूरी करने के लिए स्त्री की रचना की और स्त्री माँ के रूप में पूरी लगन और मोह से बच्चे की पालना करके परमात्मा की प्रतिनिधिता का एक महान् कार्य करती है।

सफलु जनमु हरि जन का उपजिया
जिनि कीनो सउतु विधाता ॥

ऊपर लिखित श्री गुरु ग्रन्थ साहिब के शब्द में बताया गया है कि महापुरुषों ने जन्म लेकर परमात्मा को सही अर्थों में सन्तान वाला बनाया है। बेटे तो उसके सभी हैं पर जो बेटे उसके सेवक बन जाते हैं वे उसे चमकाते हैं। परमात्मा ने हर बच्चे के पालन-पोषण के लिए माँ की एक सुन्दर रचना की है। पर जिस बच्चे की माँ भी मर जाए तथा वह बच्चा हो भी लूला तथा उसको कोई मर्द या औरत अपने पुत्र के रूप में अपनाने के लिए भी तैयार न हो तथा न ही

कोई यतीमखाना उसे दाखिल करे, यदि उसी बच्चे की पालना पूरे प्यार, लगन और फिकर से कोई आदमी करे तो वह आदमी परमात्मा को कितना ज्यादा प्यारा हो सकता है इसका अनुमान नहीं लगाया जा सकता। उसकी उपमा उसे (परमात्मा को) ही बन आती है। गुरू साहिब उस व्यक्ति को 'हरिजन' अर्थात् भगत का दर्जा देते हैं। मुझे इस बात का गर्व है कि मैंने लूले बालक को मां जैसे ममतामई हृदय की तरह पाल-पोष कर परमात्मा की भक्ति के राह चलने का एक मामूली-सा यत्न किया है।

सगल की चिंता जिसु मन माहि॥
तिस ते बिरथा कोई नाहि॥

जिस लूले बच्चे की चर्चा इस लेख में की गई है उसका जन्म पंजाब के जिला लुधियाना के एक गांव में हुआ था। बच्चे का बाप गॉव के किसी जमींदार घराने का नौकर था। जब बच्चे की आयु लगभग चार वर्ष की हुई तो उसकी माँ की मृत्यु हो गई। माँ की मृत्यु के बाद उसका बाप उसको उस घर में छोड़कर कहीं चला गया जहाँ वह नौकर था। घर वालों ने बच्चे के बाप का एक महीना इन्तजार किया पर जब वह इतने लम्बे समय में भी वापिस नहीं लौटा तो उन लोगों ने इस बच्चे को यतीमखाने में दाखिल करवाने की सोची। इसी ख्याल से उस घर के दो व्यक्ति बच्चे को अमृतसर और लाहौर शहर के यतीमखानों में लेकर गए परन्तु किसी भी यतीमखाने ने उसको लूला होने के कारण दाखिल नहीं किया। यतीमखानों से इन्कार हो जाने के बाद वे व्यक्ति उसे लाहौर शहर में श्री गुरु अर्जुन देव जी के गुरुद्वारे के मुख्य ग्रंथी जत्थेदार अच्छर सिंह को मिले। जत्थेदार साहब

ने उनकी बिनती सुनने के बाद कहा कि गुरुद्वारे में लूले बालक की सम्भाल के लिए प्रबन्ध नहीं है। जत्थेदार साहब का यह उत्तर सुँनकर उन दोनों व्यक्तियों ने मन ही मन शायद यह फैसला किया होगा कि क्यों न इस बच्चों को गुरुद्वारे के आगे चुप-चाप छोड़ दिया जाए। अगला दिन सन् 1934 में आई कार्तिक की पूर्णमासी का दिन था। उस दिन अमृत समय सुबह के अंधेरे में वे बच्चे को बादशाही किले की दीवार के समीप गुरुद्वारे के सामने सड़क पर छोड़कर चले गए। —भगत पूर्ण सिंह

How beautifully enerything is arranged by nature, as soon as a child enters the world, he finds mother to take care of it. —Michelet

अर्थात्—कुदरत ने हर वस्तु किस सुन्दर ढंग से सजाई हुई है कि ज्यों ही बालक दुनियाँ में प्रवेश करता है तो उसको सम्भालने के लिए एक माँ मिल जाती है।

—माइकलट

स्वामी हरिदास के प्रवचन

* ईश्वर और मनुष्य के बीच की दूरी को प्रार्थना का पुल बना कर जोड़ा जाता है।
* सत्संग और विवेक के अभाव में आप भगवद् कृपा प्राप्त नहीं कर सकते।
* संसार में ऐसा कोई स्थान नहीं जहां मनुष्य को अपने कर्मों का फल न मिलता हो।
* किसी भी ऊंचे स्थान पर टेढ़ी-मेढ़ी सीढ़ी के बिना नहीं चढ़ा जा सकता।
* ईश्वर ने हमें दु:ख नहीं दिया हम अपने दुर्गुणों के कारण ही दु:खी होते हैं।
* बिना चले मंजिल को पाना संभव नहीं। प्रयास तो स्वयं आपको करना पड़ेगा।

सदियों से अजमाइश में पूरे उतरे रीति-रिवाज़ों को बचाओ !

जीव-जन्तुओं को पालने वाले–धरती, पानी और हवा–तीन प्रमुख साधनों को बर्बाद करने वाली पश्चिमी मशीनी सभ्यता अब सदियों से चले आ रहे भारत के रीति-रिवाज़ों को अपने लोहे के जूतों से कुचल रही है। भारत के पुराने रीति-रिवाज़ सदियों से तजुर्बों की कसौटी पर पूरे उतरे हुएं हैं। भारत में अंगेजों का राज सौ साल से भी ज्यादा रहा और अंग्रेज हुक्मरान बन कर रहे। उन्होंने स्वयं को हर क्षेत्र में भारतीयों से पृथक रखा। भारत के पुराने धार्मिक रीति-रिवाज़ों के अनुसार गुड़ को धार्मिक मान्यता वस्तु माना गया है। अनेक धार्मिक रीतियों में गुड़ को पूजा की सामग्री के रूप में प्रयोग में लाया जाता है। गुड़ में 13 वे तत्व मौजूद बताए जाते हैं जो शरीर को पालने में सहायक होते हैं। वे सारे तत्व गुड़ से चीनी बनने की क्रिया में ही नष्ट हो जाते हैं तथा केवल दानेदार चीनी के रूप में बेकार-सी चीज़ ही रह जाती है। अंग्रेज अपने जीवन की हर कार्य-शैली में हम देश-वासियों से सदा अलग ही रहा। उसने गुड़ को खाना पसन्द नहीं किया। वह इसे घटिया वस्तु समझता रहा और चीनी को खाता रहा। अंग्रेजी राज में जिन अमीर भारतीय लोगों और अफसरों का अंग्रेज अफसरों के साथ मेल-मिलाप और उठना-बैठना रहा वे भारत के सभ्याचार और रीति-रिवाज़ों का त्याग करते गये और अंग्रेजी संभ्याचार को ग्रहण करते गये।

मेरा जन्म गांव में एक सनातन धर्मी हिन्दू परिवार में हुआ और उसी में मेरा पालन-पोषण हुआ। दशहरा और दीवाली गांव के दो प्रमुख त्यौहार माने जाते हैं। दीवाली वाले दिन मेरी माँ गुड़ से गुलगुले, मट्ठियां और पिन्नियाँ बनाया करती थी। वे पकवान बहुत ही स्वादिष्ट होते थे। हमारे घर में देशी चीनी भी होती थी

परन्तु फिर भी हमारा सारा खाना-पीना गुड़ और शक्कर से बनाया जाता था और फिर शक्कर में देशी-घी मिला कर खाना तो गांवों में एक बहुत अच्छी खुराक मानी जाती है। गुड़-शक्कर खाने वाले गांवों के लोगों के चेहरों पर जो खून के रंग वाली झलक दिखाई देती है वह गुड़ और शक्कर वाली खुराक खाने से पैदा हुई होती है। यदि हमारे घर मीठे चावल बनते थे तो वे भी गुड़ से बनते थे, चीनी के नहीं बनते थे। चीनी तो वैसे ही अमीरों वाली निशानी के तौर पर रखी जाती थी, प्रयोग में लाने के लिए नहीं। डॉक्टर कहते हैं कि यदि चीनी के बने मीठे चावल खाएँ तो अन्दर जा कर रेशा बन जाता है क्योंकि चीनी की तासीर भी वाई है और चावल भी वाई ही होते हैं। दूसरे क्योंकि गुड़ गर्म है इसलिए गुड़ चावलों की वाई को नष्ट कर देता है। गांवों में अगर कोई चीज दुकान से खरीदकर ली जाती है तो वह न तो गत्ते के बने डिब्बे में लाई जाती है और न ही कागज के लिफाफे में। यदि किसी ने रुपये, दो रुपये की मिठाई ले आनी हो तो वह घर से थाली लेकर जाता है और यदि दाल, नमक, मिर्च, गुड़, शक्कर आदि कोई वस्तु बाजार से ले आनी हो तो घर से ही छोटी टोकरी साथ ले जानी पड़ती है। जो लोग दाने भूनाने के लिए भट्ठी को जाते हैं वे दानों को या तो अपनी कमीज के पल्ले में डाल कर ले जाते हैं या फिर छोटी टोकरी में। अमृतसर शहर में रहते हुए अनेक वस्तुओं को बाजार से खरीदकर मैं अपनी कमीज के पल्ले में या फिर लोहे के बांटे में डाल लेता हूं। भारत का जो व्यक्ति अच्छी अंग्रजी पढ़ जाए तो वह काली चमड़ी वाला अंग्रेज बन जाता है। उसके रहने-सहने का ढंग सारा अंग्रेजों जैसा बन जाता है। कोई विरला ही अंग्रेजी सभ्याचार के रंग में रंग जाने से बचता है। भारत में काली चमड़ी वाले अंग्रेजों की गिनती बढ़ रही है। वे गुड़ खाने को बुरा समझते हैं और बाजार से मिठाई लाने के लिए घर से ही थाली या परात लेकर चलने पर अपनी बेइज्जती समझते हैं। अब तो मिठाई सिर्फ मिठाई की खातिर

नहीं खरीदी जाती बल्कि फूल-पौधों वाले चमकदार कागज के डिब्बों का दिखावा करने के लिए खरीदी जाती है। कमीज के पल्ले में दाने डालकर चबाने का ख्याल कोट-पैंट पहनने वाले व्यक्ति को स्वप्न में भी नहीं आ सकता। कमीज का पल्ला तो पैंट की नीचे आया होता है। भारत में बुशर्ट और पैंट का रिवाज बढ़ रहा है। पहले बुशर्ट का रिवाज़ था जिसकी एक छोटी-सी जेब होती थी पर अब तो लोग टी-शर्ट पहनने लग पड़े हैं जिसकी न तो कोई जेब ही है और न ही कोई पल्ला। कमीज की दो जेबें और दो खीसे होते हैं। जो व्यक्ति बाजार से कोई चीज केला, आम, संतरा, चीकू खरीदता है उसे वह जेब में डाल सकता है एवं खीसे में पा सकता है पर बुशर्ट ने तो लोगों की पंजाबी कहावत वाली हालत बना दी है—रब्बा दाणे न देईं, कोठी विच पाउणे पैणगे। बुशर्ट की छोटी-सी जेब ही होती है जिसमें केला भी नहीं पड़ सकता। इसलिए बुशर्ट वाले को हर चीज लिफाफे में लेनी पड़ती है। लिफाफों का यह न-मुराद रिवाज़ गाँवों में भी पहुँच गया है। दोनों तरफ से सफेद कीमती कागजों के लिफाफे बने हुए देखे जा सकते हैं। चाकू को दुकानदार लिफाफे में डालकर देता है। इससे बढ़कर पागलपन चाकू खरीदने वाले का तथा चाकू बेचने वाले का और क्या हो सकता है? सरकारी दफ्तरों के छपे हुए कीमती फार्म बाजारों में रद्दी के रूप में बिकते हैं जिनके बाद में लिफाफे बनते हैं। बैंकों के कागज बड़े कीमती होते हैं। बर्बादी वाले इन रिवाज़ों का कोट, पैंट पहनने वाले देशी अंग्रेजों ने चलाया है। वे देश पर रहम करें। यदि वे कोट-पतलून को छोड़कर कुर्त्ता-पायजामा पहनने लग पड़ें तभी लिफाफों के लिए प्रयोग होने वाले कागज की बर्बादी बन्द हो सकती है। गरीब घरों के बच्चे भी बिगड़ रहे हैं। वे भी बुशर्ट और पतलून पहनने लग पड़े हैं। पतलून की सिलाई 50 रुपये होती है और पायजामे की 10 रुपये। फलों की दुकानों के आगे मोटर-कारों वाले अमीर लोग फल खरीदते देखे जा सकते हैं। वे मजबूत कीमती

कागज के बने 4-4 लिफाफों में फल खरीदकर घरों में ले जाते हैं। उन्हें प्रतिदिन नये लिफाफे दुकान से ले जाने होते हैं। वे फलों के लिए घर से कपड़ा, झोला, लोहे की बाल्टी या परात लेकर लाने को अपनी शान से उल्ट समझते हैं। उन्होंने तो गरीबों की दुनिया से अपने आप को पृथक किया होता है। उनकी दृष्टि में गरीब तो कीड़े-मकोड़े हैं, जैसे मोटर-कारों के नीचे आकर चाहे कितने ही कीड़े-मकोड़े मर जाएँ, मोटर-कार वालों को कोई फिक्र नहीं होता। खुले खर्च करने वाले सरकारी अफसर और अमीर लोग यह कभी नहीं सोचेंगे कि गरीबों को भूख-नंग से कीड़ियों की तरह मरने से बचाने के लिए उन्हें अपने खर्च घटाने चाहिए। वे तो आँखें मूंद कर बेहताशा अपने खर्चों को बढ़ाते हैं, चाहे उन खर्चों को करने के लिए कितनी ही रिश्वत लेनी पड़े, वेतन के भत्ते बढ़ाने पड़ें, कम तौलना पड़े, वस्तुओं के मूल्य बढ़ाने पड़ें, मिलावट करनी पड़े, चोर-बाजारीं करनी पड़े या टैक्सों की चोरी करनी पड़े। यह रीति बहुत बुरी रीति है। मैंने सारी आयु सड़कों के किनारे बैठकर भिखारियों की तरह दान माँगा है। मुझे प्रचार करने के लिए रद्दी कागज की जरूरत होती है परन्तु बुशर्टों और पतलूनों वालों ने देश में लिफाफों की जरूरत बढ़ाकर देश में कागज का संकट पैदा किया हुआ है। भारतीय दुकानदारों ने भारत के हर व्यक्ति को अंग्रेज समझा हुआ है चाहे कोई गरीब है या अमीर। दुकानदारों ने यह समझा हुआ है कि सारे आदमी हाथों के बिना हैं। वे विचारे हाथों के बिना चाकू को किस प्रकार पकड़ेंगे? यदि किसी व्यक्ति ने दुकानदार से दस रेवड़ियां लेनी हों जिनको उसने उसी समय खा लेनी हैं, पर दुकानदार फिर भी उन दस रेवड़ियों को कागज के लिफाफे में ही डालकर देगा, ऐसा पर्दा दुकानदार की बुद्धि पर पड़ा होता है। सरकार ने ज्यादा ध्यान शहरों और कारखानों के मालिकों के लिए देना होता है। गाँवों और गरीबों का तो परमात्मा ही रखवाला होता है। गाँव में मेरे जैसे

दरबार साहिब का पहरा देने वाला कोई झाड़ू-बरदार भगत जन्म ले ले और इन बातों के लिए आवाज उठाए, सरकारी दरबार में भूकम्प ले आए। परन्तु यदि पैदा ही न हो तो गाँवों की सुनवाई कौन करे? भारत के गांवों की जान पीपल, नीम और बरोटा (बट वृक्ष) तीनों वृक्ष सरकार को भूल गये हैं। बेशक पीपल वृक्ष को पूजा का स्थान दिया गया था किन्तु कागज के कारखानों को सफेदे के वृक्ष चाहिए क्योंकि कागज सफेदे के वृक्ष से बनता है। इसलिए कागज के कारखानों की इस जरूरत को पूरा करने के लिए सरकार का पूरा ध्यान सफेदे के वृक्ष लगाने में लगा हुआ है। सफेदे के वृक्षों पर कोई पक्षी घोंसला नहीं बना सकता। सफेदे के वृक्षों का फैलाव बढ़ जाने के कारण गिद्धें घोंसलों के बगैर मर रही हैं। गिद्धें मरे हुए पशुओं का मांस खाती हैं। गिद्धों की गिनती कम हो जाने के कारण गाँवों में मरे हुए पशुओं का मांस सड़-सड़ कर दुर्गन्ध और अनेक प्रकार की बीमारियां पैदा कर रहा है। वृक्षों और बांसों को खत्म करने के कारण जहां पहाड़ों की धरती रुण्ड-मुण्ड हो चुकी है वहीं मैदानी इलाके की भी। कागज के कारखानों को सफेदे के वृक्ष देने के कारण भारत में न तो पीपल की कोई हैसियत रही है और न ही नीम और बट वृक्ष की। पीपल, नीम और बट वृक्ष सूर्य की धूप को अपने में समाकर लोगों को अन्धे होने से बचाते हैं और बसों, ट्रकों तथा कारखानों के शोर को अपने में जज्ब करके लोगों को बहरे होने से बचाते हैं। कागज के कारखानों ने हिन्दुओं के सबसे बड़े तीर्थ गंगा के पानी को गंदा कर दिया है। बुशर्टों वाले अफसरो और अमीर लोगो ! यदि आपको आने वाले समय का फिकर है तो आप बुशर्टों और पतलूने पहनना छोड़कर कुर्त्ता-पायजामा पहन लो। लिफ़ाफों और डिब्बों में वस्तुएँ लेना छोड़ दो। दीवाली वाले त्यौहार पर गुड़ के गुलगुले और मट्ठियाँ बनाया करो।

सुनने में आया है कि हरियाणा प्रांत की सरकार किसानों

पर यह पाबंदी लगाने लगी है कि वे एक साल तक गन्ना निचोड़कर गुड़ न बनाएं तथा उस गन्ने को सीधा चीनी बनाने वाले कारखानों में ले जाएं। यह खबर सुनकर महात्मा गाँधी और संत विनोबा भावे की आत्माएं तड़प रही होंगी एवं देशी अंग्रेजों को कोस रही होंगी। देशी अंग्रेज अफसरो और अमीर लोगो ! जब देश की आधी आबादी कंगाल हो चुकी है तो क्या आपको अपने फालतू खर्चे कम करने का ख्याल नहीं आ रहा? देश के लिए भारी खतरे पैदा हो चुके हैं। आप लिफाफों और डिब्बों में वस्तुएं लेना बन्द कर दो। काले अंग्रेज अफसरो और अमीर लोगो ! गरीबों की बददुआओं से बचो! गरीब की ऐसी बददुआएं भस्म कर दिया करती हैं।

—भगत पूर्ण सिंह

पिंगलवाड़ा के कार्य, उद्देश्य तथा महत्ता

–'सुरजीत सिंह राही'

आगाज

विश्व में जहां सिख सभ्याचार का केन्द्रीय स्थान सिफती का घर श्री दरबार साहिब अमृतसर के नाम से जाना जाता है वहीं पर उत्तरी भारत की सीमा के शहर में सिक्खी परम्पराओं में से सेवा के सद्‌गुण लेकर प्रफुलित हुई एक चिकित्सक-सामाजिक संस्था पिंगलवाड़ा बेमिसाल हैसियत रखती हुई पीड़ित मानवता के लिए ऐसी सेवा निभा रही है जिसके ऊपर सामाजिक तथा मानवीय सांझ रखने वालों को गर्व है।

पिंगलवाड़ा संस्था के नाम की स्थापना यद्यपि सन् 1934 में कार्तिक की पूर्णिमा की रात को आरम्भ हो गई थी, जब एक चार साल का लूला बच्चा पंचम-पातिशाह जी के शहीदी स्थान गुरुद्वारा डेहरा साहिब लाहौर के दरवाजे के सम्मुख लावारिसी की हालत में छोड़ दिया गया था तथा जिसको उस समय के हेडग्रन्थी जत्थेदार अच्छर सिंह जी ने अरदास करने के पश्चात् भगत पूर्ण सिंह जी

की झोली में डाल दिया था, जिसको एक ही समय में माता-पिता, भाई-बहन का प्यार मिला और जो 27 अक्तूबर, 1994 को लोगों में प्यार बांटता हुआ अचानक गुरू चरणों में जा बिराजा। इस बीज रूप का विकास सन् 1947 तक तथा 18 अगस्त, 1947 के पश्चात् अमृतसर रहते हुए जिस तरह से सड़कों के किनारों तथा जिन जटिल तथा विषम रास्तों में से गुजरते हुए हुआ, उसका विवरण दिल कम्पा देने वाला तथा मानवीय हृदय को आज भी झंझोर देने वाला है, जिसका पूर्णरूप से विवरण यद्यपि नहीं किया जा सकता पर मोटे-तौर पर यह प्राणीमात्र का सेवा-कार्य भगत पूर्ण सिंह जी की ओर से नंग-धड़गी हालत में खालसा कालेज में लगे रिफ्यूजी कैम्पों, चीफ खालसा दीवान के बाहर, रेलवे स्टेशन के डाकखाने के समीप, गुरु तेग बहादुर अस्पताल के गेट के बाहर एक बरगद के नीचे, सिविल सर्जन के दफ्तर के साथ लगती हुई निकासी जगह या फिर राम-तलाई के गली-मुहल्लों में से मरीजों के लिए लोगों से मांग-मांग कर प्रफुल्लित किया गया, परन्तु इसको प्रेरक तथा दार्शनिक शक्ल-सूरत तब ही मिली, जब इसको वर्तमान बिल्डिंग में सन् 1956-57 में रजिस्ट्र नम्बर 130, एक्ट 1860 के अनुसार रजिस्ट्रार कम्पनीज की ओर से 6 मार्च 1957 को आल इण्डिया पिंगलवाड़ा सोसायटी के नाम से बाकायदा रजिस्ट्रर्ड करवा लिया गया, जो भारतीय इन्कम टैक्स 80 जी, इन्कम टेक्स एक्ट 1961 के सब-सैक्शन के तहत एकाऊंट पक्ष की सभी शर्तें पूरी करती है। इस सोसायटी के सात मैम्बर होते हैं जो संस्था को अपनी निष्काम सेवाओं द्वारा त्रैमासिक मीटिंगों या पहले रखी मीटिंगों में संस्था के खर्चों, भविष्य की योजनाएं, मरीजों के लिए अच्छे ढंग से प्रगतिशील उपाय तथा लोक-भलाई की सहानुभूति के यत्नों में लगे रहते हैं। मैम्बर भी उन्हीं को बनाया जाता है जिनमें सामाजिक कल्याण, मनुष्य मात्र की भलाई, जाति-पात, नस्ल, रंग, राजसी तथा धर्म से ऊपर उठकर जीवन व्यतीत करने की रुचि हो।

नाम की महत्ता

पिंगलवाड़ा नाम चाहे एक पिंगले तथा प्रारम्भिक बालक प्यारा सिंह से प्रेरित होकर रचा गया, परन्तु यहाँ पर हर उस दुखियारे के लिए अपने घर जैसा माहौल है, जो किसी बीमारी के कारण समाज में अपने आप को लावारिस, फालतू तथा अपने आप को अनचाहा महसूस करता है। इनमें से अपाहिज, बीमार, कमजोर, वृद्ध, विधवा स्त्रियां, गरीब विद्यार्थी तथा विशेषतौर पर पागल लड़कियाँ, लड़के, स्त्रियां तथा दूध पीते लावारिस बच्चों की सेवा-सम्भाल करना शामिल है। यह सेवा-सम्भाल जात-पात, धार्मिकता, ऊंच-नीच, रंग, नस्ल, द्वेष तथा भेद-भाव से ऊपर उठकर की जाती है। संस्था में लावारिस पागल लड़कियों तथा औरतों को पहल के आधार पर दाखिल किया जाता है, क्योंकि उन बे-आसरा घूमती हुई स्त्रियों तथा लड़कियों की इज्जत को बाहर भारी खतरा होता है। अनेक बार तो घर भूल चुकीं इन लड़कियों को सुजाक-आतशिक जैसे एक-दूसरे को लगने वाले भयानक रोग भी लग चुके होते हैं, जिनकी रिहायश, दवाइयां, रोटी-कपड़ा तथा देख-भाल की सभी जिम्मेदारियाँ यह संस्था अपने सिर लेती है जिसकी किसी भी सरकारी या स्वयं-सेवी संस्था में व्यवस्था नहीं की गई। इस सामाजिक चिकित्सक-संस्था के सेवादारों तथा प्रबन्धकों के मनों में दैवी दरवेश भगत पूर्ण सिंह जी की ओर से मानवता की भलाई के लिए किए गए प्रयत्नों को हमेशा याद रहते हैं तथा यही कारण है कि वे जी-जान, तन-मन से इस सेवा को निभाते हैं।

संस्था में मरीजों को नीचे लिखी गई वार्डों और शाखाओं में इलाज और सेवा-सम्भाल के लिए रखा गया है--

मुख्य दफ्तर (बच्चा वार्ड)

यह वार्ड मुख्य दफ्तर तहसीलपुरा, जी. टी. रोड पर स्थित है जहां 102 पागल स्त्रियां, बच्चियाँ और मन्द-बुद्धि बच्चों को रखा गया है। एक अलग वार्ड में नव-जन्में दूध से पलने वाले बच्चों की परवरिश की जा रही है।

माता महिताब कौर वार्ड

यह वार्ड रामतलाई में स्थित होने के कारण रामतलाई वार्ड के नाम से जानी जाती रही है जिसमें पागल स्त्रियों को इलाज व सेवा-सम्भाल के लिए दाखिल किया जाता है। भगत पूर्ण सिंह जी के परलोक सिधारने के बाद वार्ड का नाम उनकी माता जी के नाम पर माता महिताब कौर वार्ड रख दिया है। यह रामतलाई चौक से घी मण्डी वाली सड़क पर बाएं हाथ में स्थित है। इसमें जून 2011 के अनुसार इस वार्ड में 158 पागल औरतों का इलाज और सेवा-सम्भाल की जा रही है।

भाई प्यारा सिंह वार्ड

इस वार्ड में पागल, चीर-फाड़ वाले तथा मन्द-बुद्धि वाले बच्चों एवं बुजुर्गों को रखा गया है। जिनका सरकारी अस्पताल में लगातार दिखाकर इलाज किया जाता है। मुख्य दफ्तर में आने वाले किसी भी पुरुष मरीज को पहले इसी वार्ड में भेजा जाता है। इसके बाद अन्य वार्डों में भेजा जाता है। जहां बाद में किसी दूसरी ब्रांच या ठीक होने के उपरान्त घर भेजा जाता है। जून 2011 में इस वार्ड में 97 मरीजों की सेवा-सम्भाल हो रही है।

पंडोरी वड़ैच शाखा

यह शाखा अमृतसर शहर से 10 किलोमीटर दूर मजीठा रोड पर पन्डोरी वड़ैच गांव में स्थित है। इस शाखा में 62 मानसिक पीड़ित मरीजों की सेवा-सम्भाल हो रही है।

अमृतसर के अतिरिक्त दूसरे शहरों में पिंगलवाड़े की ब्रांचें इस प्रकार हैं।

मानांवाला कम्पलैक्स

यह अमृतसर से 8 किलोमीटर दूर जालन्धर को जाते हुए जी. टी. रोड दुबुर्जी से थोड़ा आगे दाहिने हाथ में स्थित है। इस कम्पलैक्स में भगत पूर्ण सिंह जन्म शताब्दी को समर्पित कई योजनाओं को साकार रूप दिया गया है। यहां की वार्डों में जून 2011 के अनुसार 630 मरीजों को सम्भाला जा रहा है।

भगत पूर्ण सिंह बनावटी अंग केन्द्र

यह बिल्डिंग कनाडा की संगत के सहयोग से बनी है। यहां जरूरतमन्द गरीब अंगहीनों को बनावटी अंग बनाकर मुफ्त दिये जाते हैं। इसका उद्घाटन 23 नवम्बर, 2003 को माननीय H. E. HANS JOACHIM KIDERLEN MINISTER, EMBASSY OF FEDERAL REPUBLIC OF GERMANY ने किया था। जून 2011 तक 2461 अपाहिजों को बनावटी अंग बनाकर नि:शुल्क लगाए गये हैं और 851 अपाहिजों के बनावटी अंगों को ठीक किया गया है।

गऊशाला

मानांवाला कम्पलैक्स में नई गऊशाला का निर्माण हो चुका है। यहाँ पर 180 गऊओं की सेवा-सम्भाल हो रही है। गोबर गैस प्लांट भी लगाया जाएगा। इन गऊओं का दूध मरीजों के उपयोग में लाया जाता है।

शिक्षा का प्रबन्ध

गरीब, लाचार तथा समाज द्वारा ठुकराए हुए बच्चों को नि:शुल्क शिक्षा प्रदान करने के लिए तीन स्कूल चलाए जा रहे हैं।

भगत पूर्ण सिंह आदर्श स्कूल मानांवाला कम्पलैक्स

इस स्कूल में 625 बच्चों को मुफ्त शिक्षा प्रदान की जा

रही है इनमें झोंपड़-पट्टी के, 106 बच्चे संस्था के तथा दूसरे जरूरतमन्द गरीब परिवारों के बच्चे पढ़ाए जा रहे हैं। बच्चों को स्कूल ले जाने तथा वापस घर भेजने के लिए बस का प्रबन्ध है।

भगत पूर्ण सिंह आदर्श स्कूल बुटर-कलां, कादियां (गुरदासपुर)

यह स्कूल कादियां के नजदीक बूटर-कलां गांव में स्थित है जिसमें लगभग 370 के करीब बच्चे नि:शुल्क शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं।

भगत पूर्ण सिंह स्कूल ऑफ स्पेशल एजूकेशन

यह स्कूल मानांवाला कम्पलैक्स में ही खोला गया है जहां मन्द-बुद्धि बच्चों को शिक्षा तथा शारीरिक शिक्षा पुनर्वास के लिए तैयार किया जाता है। ये बच्चे जिला तथा राज्य स्तर पर होने वाले खेल-कूद में इनाम प्राप्त कर चुके हैं। इन बच्चों को पढ़ाने के लिए योग्य शिक्षक कार्यरत हैं। इस समय यहां 110 बच्चे पढ़ रहे हैं।

गूंगे-बहरे बच्चों की शिक्षा

भगत पूर्ण सिंह गूंगे-बहरे बच्चों का स्कूल मानांवाला में मई, 2005 से चल रहा है। इसमें लगभग 90 बच्चे आधुनिक उपकरणों के द्वारा शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

माता महिताब कौर निवास

पिंगलवाड़ा की पढ़ने वाली बच्चियों के लिए मानांवाला कम्पलैक्स में एक होस्टल भगत जी की माता के नाम पर माता महिताब कौर निवास बनाया गया हैं। जहां इस समय 34 बच्चियां रहती हैं।

भगत पूर्ण सिंह निवास

बाहर से आने वाले पिंगलवाड़ा प्रेमियों के लिए निवास बनाया गया है। इसी निवास में आल इण्डिया मेडीकल इंस्टीट्यूट से लाये गये एक ही शरीर में दो प्राण 'सोहणा-मोहणा' को रखा गया है। जो अब आठवें साल में परवरिश पा रहे हैं।

अपना घर (सीनीयर सिटीजन होम)

बुजुर्गों के लिए अपना घर बनाया गया है। इसमें 46 दम्पति और 46 अकेले वृद्धों के रहने का प्रबन्ध है।

भगत पूर्ण सिंह नर्सरी

भगत पूर्ण सिंह जी की याद को समर्पित भिन्न-भिन्न किस्म की नर्सरी तैयार की गई है। भगत जी की सालाना बरसी पर हर साल स्कूलों, कालेजों, श्मशान-घाटों तथा अन्य सार्वजनिक स्थानों पर वृक्ष लगाने की मुहिम चलाई जाती है। सन् 2003 से लेकर आज तक अपनी नर्सरी में पैदा किये अमलतास, कचनार, बहोड़ा, जामुन, कदम, गुलमोहर, नीम, चकरेसीया, कनेर, पीपल, अर्जुन, सुखचैन, आदि 52 किस्म के पौधों को तैयार करके लाखों की संख्या में सोसायटी मैंबर सरदार राजबीर सिंह, इंचार्ज कुदरती खेती फार्म धीर कोट के नेतृत्व में और प्रधान डॉ. इन्द्रजीत कौर के निर्देशानुसार लगाये जा रहे हैं।

प्राकृतिक आपदाओं से पीड़ित लोगों की सहायता

प्राकृतिक आपदाओं जैसे बाढ़, भूकम्प तथा चक्रवात् से प्रभावित लोगों की पिंगलवाड़ा संस्था समय-समय पर हर प्रकार से हर सम्भव सहायता करती आ रही है। अक्तूबर, 2004 को जम्मू-कश्मीर के आतंकवाद पीड़ित शरणार्थियों को दवाइयां, कम्बल तथा वस्त्रों का वितरण किया गया। अक्तूबर 2005 को जम्मू-कश्मीर में भूकम्प पीड़ितों को राहत कार्य के अन्तर्गत 4000 कम्बल और खाद्य सामग्री पीड़ित लोगों के लिए भेजी गयी । इसके अतिरिक्त पाकिस्तान में भी भूकम्प पीड़ितों के लिए 2000 कम्बल और गर्म कपड़े भेजे गये। अगस्त 2008 में पिंगलवाड़ा की तरफ से लगभग 800 परिवारों को राशन, कपड़ा आदि बीबी जी ने खुद अपनी टीम के साथ वितरित किया। पिछले साल लेह-लद्दाख में बादल फटने के कारण आई बाढ़ पीड़ित लोगों के लिये कम्बल,

कपड़े और राशन के दो ट्रक भेजे गये जिन्हें संस्था मुखी डॉ. इन्द्रजीत कौर ने खुद वितरित किया।

गोइंदवाल साहिब ब्रांच

यह ब्रांच गुरुद्वारा गोइंदवाल साहब के नजदीक स्थित है। जिसमें लगभग 112 मरीजों की सेवा-सम्भाल हो रही है।

जालन्धर ब्रांच

यह ब्रांच धोबी मोहल्ला मकदूमपुरा, नजदीक पुरानी कचहरी के पास है। जहां इस समय 36 बेसहारा बुजुर्गों को घर जैसे महौल में रखा गया है।

संगरूर ब्रांच

यह ब्रांच संगरूर बस अड्डे से 3 किलोमीटर दूर धूरी रोड पर स्थित है। इसमें 229 पागल पुरुष और स्त्रियां हैं। इस शाखा में वृद्धों के लिए अलग कमरों का प्रबन्ध किया गया है। जिसमें 10 वृद्ध जोड़े और 14 अकेले बुजुर्गों को रखने की व्यवस्था है। इस ब्रांच के आनरेरी प्रबन्धक पिंगलवाड़ा सोसायटी के मैंबर सरदार तरलोचन सिंह चीमा हैं।

पलसोरा चंडीगढ़ ब्रांच

यह ब्रांच मोहाली के नजदीक गांव पलसोरा चंडीगढ़ में स्थित है। जहां इस समय 108 मरीजों को सम्भाला जा रहा है। यहां पर 250 मरीजों को रखने की व्यवस्था है। इस शाखा की देख-भाल बीबी कुलजीत कौर तथा पिंगलवाड़ा सोसायटी के मेम्बर श्री पी. सी. जैन की देख-रेख में हो रही है।

लुधियाना ब्रांच (दफ्तर)

यह दफ्तर एक कोठी में जो संस्था को बीबी हरबंस कौर ने अपने पति की याद में दान दी थी, में खोला गया है। जो कि 84 साउथ माडल ग्राम में स्थित है। जहां के इंचार्ज सरदार संगत सिंह हैं।

पिंगलवाड़ा के रोगियों की सूची

संस्था की वार्ड और शाखाओं में 05-01-2014 तक कुल मरीजों की गिनती का विवरण इस प्रकार है–

मानसिक रोगी	– 449
मंद-बुद्धि वाले	– 306
अधरंग, पोलियो वाले	– 157
गूंगे-बहरे	– 137
वृद्ध (बुजुर्ग)	– 122
जख्मों वाले	– 56
टी. बी. वाले	– 21
नेत्रहीन	– 28
एड्स वाले	– 08
मिर्गी वाले	– 212
कैंसर वाले	– 01
शूगर वाले	– 60
स्कूल जाने वाले बच्चे	– 100
छोड़े गये बच्चे	– 12
ठीक हो चुके रोगी	– 36
कुल मरीज	– 1705

पिछले एक साल में मरीजों की गिनती में काफी बढ़ोतरी हुई है। जुलाई 2007 में जो गिनती 1244 थी वह जनवरी 2014 में बढ़कर 1705 हो गई है। मरीजों को बेहतर इलाज और सुविधाएं मिलने से 195 मरीजों को घरों में भेजा गया।

संस्था के आमदन-स्रोत

(1) संस्था की तरफ से भिन्न-भिन्न शहरों में रसीद-बुक के साथ उगराही करने के लिए सेवादारों की नियुक्ति की हुई है। जो दानियों से दान लेकर कच्ची रसीद काटकर दे देते हैं और पक्की

रसीद दफ्तर में पैसा जमा होने के बाद दानियों को भेजवा दी जाती है। दान दी गई राशि पर केन्द्रीय सरकार की तरफ से 80-जी इन्कम टैक्स की धारा 1961 के अधीन टेक्स की छूट प्राप्त है।

(2) संस्था की एक सहायक ब्रांच कैनेडा में पिंगलवाड़ा सोसाइटी ऑफ अंटॉरीयो, कैनेडा (Pingalwara Society of Ontario (Regd.), Canada में स्थापित की गई है। जिसको बीबी अबनास कौर अपने सहयोगी मैम्बरों की मदद से पूरी मेहनत और मन लगाकर चला रही हैं। यह सोसाइटी वहां के दानियों से दान इक्ट्ठा करके भेजते रहते हैं। बीबी अबनास कौर के साथ नीचे दिये गये पते पर सम्पर्क स्थापित किया जा सकता है।

Bibi Abnash Kaur.

124, Blackmere Cir, Brampton ONT., L6W 4CI

CANADA, Tel. : 001-905-450-9664

(3) शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी अमृतसर की तरफ से हर साल 10 लाख रुपये की सहायता मिलती है।

(4) ऐतिहासिक गुरुद्वारा साहब के बाहर संस्था की तरफ से रखी हुई गोलकों से मिलने वाली सहायता अहम् भूमिका निभाती है।

दानी सज्जन उन लोगों का वहिष्कार करें जो पिंगलवाड़ा के नाम पर गांवों में जाकर अनाज इक्ट्ठा करते हैं। संस्था की तरफ से कोई भी सेवादार गांवों में अनाज इक्ट्ठा करने के लिए नहीं भेजा जाता है। संगतें स्वयं ही अनाज पहुंचाने या सूचित करने की कृपा करें।

(5) आल इण्डिया पिंगलवाड़ा चैरीटेबल सोसाइटी (रजि.) अमृतसर ने 28 मार्च, 2006 को एक मता पास करके यह फैसला किया है कि आगे से संस्था का कोई भी सेवादार डिब्बा (दान-पात्र) द्वारा रेलवे स्टेशन, बस स्टैंड, गली-मोहल्लों या किसी दूसरी जगहों में माया की उगराही नहीं करेगा। संगत इस प्रति सुचेत रहे तथा सहयोग दे ताकि संस्था के नाम का उपयोग करने वालों पर अंकुश लगाया जा सके।

संस्था की प्राप्तियां

संस्था के अन्दर भगत पूर्ण सिंह जी की याद को समर्पित भगत पूर्ण सिंह यादगारी अजायबघर बनाया गया है, जिसमें भगत जी की जीवन से सम्बन्धित यादों को सम्भाला गया है। भगत जी जीवनी अथवा संस्था के बारे में एक डाकूमेन्टरी फिल्म (चलचित्र) भी बनाई गई है।

पुनर्वास केन्द्र

संस्था में एक पूनर्वास केन्द्र खोला गया है, जहां समाज से तृष्कारे, पागल तथा अपंग, मन्द-बुद्धि वाले कोई न कोई काम सीख कर समाज में सम्मान पूर्वक जीवन गुजार सकते हैं। इस केन्द्र में कपड़ों की सिलाई, कढ़ाई, टाइप करना, कम्प्यूटर चलाना, मोमबत्तियां बनाना तथा खिलौना बनाना शामिल है।

डिस्पैंसरी (दवाखाना)

संस्था में एक डिस्पैंसरी बनाई गई है। जहां पर आश्रम की मुख्य डॉ. इन्द्रजीत कौर के अलावा डॉ. जगदीपक सिंह' ई. एन. टी. विभाग, डॉ. जसमीन डेन्टल केयर विभाग, डॉ. करन जीत सिंह बच्चों के माहिर, डॉ. तेजपाल सिंह मेडीसन आनरेरी तौर पर संस्था के मरीजों और सेवादारों को देखकर दवाई देते हैं। संस्था की तरफ से झोपड़-पट्टियों में पोलियो कैम्प लगाया जाता है और दिन ब दिन बढ़ रही मरीजों की संख्या को मद्देनज़र रखते हुए और वार्डें बनाई जा रही हैं। डिस्पैंसरी में आने वाली दवाइयों का खर्चा 70,00,000 लाख रुपये वार्षिक है।

आप्रेशन थियेटर और लैबोरटरी

पिंगलवाड़े के मरीजों तथा जरूरत-मन्द गरीबों के लिए एक आप्रेशन थियेटर, दवाखाना और लैबोरटरी बनाई गई है। जहां पर ये सभी सहूलियतें मुफ्त दी जाती हैं।

ट्रोमा वैन

सड़क हादसों में जख्मी होने वाले पीडित लोगों को तत्कालीन उपचार देने के लिए संस्था के अन्दर एक ट्रोमा वैन हर समय तैयार रहती है।

दन्त चिकित्सालय

पिंगलवाड़ा संस्था तथा पलसोरा चंडीगढ़ ब्रांच में मरीजों, सेवादारों और गरीब लोगों की सहूलीयत के लिए अलग-अलग दन्त चिकित्सालय खोले गये हैं जहां पर दांतों की बीमारियों से सम्बन्धित मरीजों की जांच-पड़ताल और इलाज की सुविधा प्रदान की जाती है।

विवाह कार्य

संस्था में पोषित हुए नवयुवक और नवयुवतियों की योग्य जीवन साथी ढूंढ़कर शादियां की जाती हैं। भगत जी की मृत्यु के बाद अब तक 26 लड़कियां तथा 4 लड़कों की शादियां की गई हैं।

लोक भलाई कार्य

प्राकृतिक संकट एवं पीड़ित मानवता के दर्द को बांटने हेतु संस्था द्वारा दवाइयां, कपड़ों तथा जरूरत की अन्य चीजें पहुँचाई जाती हैं।

कुदरती खेती

संस्था ने जंडियाला के नजदीक गांव धीरेकोट में 40 एकड़ जमीन पर कुदरती खेती का फार्म बनाया है। यहां पर गेहूं, धान, गन्ना, मकई, और हर प्रकार की सब्जियाँ बिना किसी पेस्टीसाइड (Pesticide) के उगाई जा रही हैं जो कि एक उदाहरण है। यहां का प्रबन्ध मास्टर राजवीर सिंह मैम्बर पिंगलवाड़ा की देख-रेख में चलता है।

लावारिस लाशों का दाह-संस्कार

पिंगलवाड़ा संस्था की ओर से लावारिस लाशों का पूरे सत्कार से दाह संस्कार किया जाता है। 2011 में अब तक 120 लावारिस लाशों का दाह-संस्कार कर चुकी है।

मेडिकल कालेजों को सुविधाएं

मेडीकल कालेजों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों की पढ़ाई करने के लिए लाश (डेडबॉडी) की जरूरत होती है। संस्था की तरफ से समय-समय पर कालेजों को लावारिस लाशें भेजी जाती हैं।

चेतना जागृति

लोगों में चेतना जागृति करने हेतु प्रसिद्ध विद्वानों द्वारा लिखे गये सामाजिक, धार्मिक एवं वातावरण से सम्बन्धित लेखों को छापकर मुफ्त वितरित किया जाता है। भगत जी की सोच पर पहरा देते हुए हर साल कई हजार नये वृक्षों का रोपण किया जाता है।

वार्डों में डेक

वार्डों में सेवा-सम्भाल हेतु रखे गये मरीजों को गुरबाणी सुनाने के लिए वार्डों में डेक लगाये गये हैं। जिनके द्वारा मरीज सुबह और शाम गुरबाणी सुनते हैं।

सेल टेक्स माफी

संस्था के लिए खरीदे गये सामान पर पंजाब सरकार द्वारा सेल टेक्स माफ है।

भगत पूर्ण सिंह जी पर डाक टिकट जारी

भगत पूर्ण सिंह जी की जन्म शताब्दी 2004 को समर्पित भारत सरकार को संस्था की तरफ से निवेदन किया गया था कि सरकार भगत जी की मानवता के प्रति की गई सेवाओं को समर्पित एक डाक टिकट जारी करे। दिनांक 10 दिसम्बर, 2004 को दिल्ली में तीन मूर्ति भवन में एक समारोह में संचार एवं सूचना एवं टेक्नोलॉजी केन्द्रीय राज्य मन्त्री डॉ. शकील अहमद ने भगत पूर्ण सिंह जी के बारे एक डाक टिकट जारी करते हुए कहा कि यह डाक टिकट लोगों को भगत पूर्ण सिंह जी के आदर्शों का संदेश व सेवा की प्रेरणा देगी। इस समारोह में भूतपूर्व केन्द्रीय मन्त्री अरुण शोरी, श्री सुखदेव सिंह ढींढसा तथा वातावरण प्रेमी श्री सुन्दर लाल बहुगुणा विशेषरूप से उपस्थित थे।

भगत पूर्ण सिंह को मिलने वाले पुरस्कार

भगत पूर्ण सिंह जी को देश की अनेक सभा-सोसायटियों, गुरुद्वारा साहब की संगतों, स्कूलों और कालेजों की तरफ से सम्मानित किया जाता रहा है। लेकिन जिन सरकारी और गैर-सरकारी संस्थाओं की तरफ से विशेष सम्मान दिये गये उनमें पद्मश्री अवार्ड, हारमनी अवार्ड, लोक रत्न अवार्ड (राष्ट्रीय पुरस्कार) भाई कन्हैया अवार्ड (मानव अधिकार संगठन) सरबत् दा भला अवार्ड आदि अनेकों पुरस्कार शामिल हैं।

संस्था को दरपेश मुश्किलें

(1) पिंगलवाड़ा संस्था को जो दानी दान देते हैं यह रकम जरूरत मंद बे-आसरे अपाहिजों के लिए प्रयोग की जाती है। दान दी जाने वाली रकम पर सरकार की तरफ से 80-जी इन्कम टैक्स की धारा 1961 के अधीन टैक्स में छूट प्राप्त है।

(2) पिंगलवाड़ा शब्द को किसी और संस्था को प्रयोग करने का अधिकार नहीं होना चाहिए लेकिन कई संस्थाएं इस नाम के साथ मिलता-जुलता नाम रख कर लोगों को गुमराह करके दान इक्ट्ठा कर रहे हैं। सरकार को चाहिए कि ऐसी संस्थाओं से शक्ति से निपटकर उनको रोकें।

(3) पिछले 30 सालों से पिंगलवाड़े के साथ लगती जगह तहसील कम्पलेक्स और स्तबल कम्पलेक्स बिल्डिंग (जो अब जालन्धर जा चुकी है) की मांग सरकार से की जा रही है। पर पता नहीं क्यों सरकार इस तरफ ध्यान नहीं दे रही है जब कि मानवता की सेवा के आधार पर यह काम होना चाहिए। क्या यह सितमजरीफी नहीं कि सरदार हरचरण सिंह बराड़ मुख्य मन्त्री के पद पर होते हुए पिंगलवाड़ा में आ कर तहसील बिल्डिंग पिंगलवाड़े को देने का ऐलान कर गये पर वह अभी तक नहीं मिली।

नई बिल्डिंग योजनाएं

साल 2010 में मुख्य दफ्तर में प्रबन्धकी ब्लाक, मानांवाला कम्पलैक्स में गूंगे-बहरे बच्चों के लिए, टी. वी. मरीजों के लिए और गूंगे-बहरे बच्चों के आप्रेशन Cochlear Implant के लिए नई

आधुनिक बिल्डिंग बनाई गई हैं। नये बने आप्रेशन रूम में दो बच्चों के Cochlear Implanst देश के प्रसिद्ध डाक्टरों की टीम ने किये हैं जो एक अपनी मिशाल है।

पिंगलवाड़ा विद्वानों और उच्च शख्सीयतों की नजर में

पिंगलवाड़ा और इसके संस्थापक के बारे में देश-प्रदेश के कई विद्वानों ने इसको ऊंचाइयों तक पहुंचान के लिए बहुत कुछ लिखा। विख्यात विद्वान् सरदार खुशवंत सिंह ने तथा श्री वी. एन. नारायनन अडीटर इंचार्ज 'हिन्दुस्तान टाइम्स समूह' ने जो लिखा उसका वर्णन करना जरूरी है। सरदार खुशवंत सिंह ने अपने लेख में यह लिखा है कि "उस यात्री या शैलानी की यात्रा ही अधुरी है यदि वह श्री दरबार साहब के दर्शन के बाद पिंगलवाड़े में होकर नहीं जाता।" तो श्री वी. एन. नारायनन ने अपने लेख में भारतीय नीतिवानों को यह कहकर झंझोड़ा है कि "परमात्मा उन लोगों की मदद करता है जो अपनी मदद खुद करते हैं। पर भगत पूर्ण सिंह जी ने पिंगलवाड़ा बनाकर उनकी मदद की है जो अपनी सहायता करने में असमर्थ हैं। फिर इस महान् पुरुष को नोबल पुरस्कार देकर क्यों न सम्मानित किया जाये। क्या इस युग-पुरुष के द्वारा की गई सेवा मदर टेरेसा के द्वारा की गई सेवा से कम है।

मैं भगत पूर्ण सिंह जी की आंतरिक भावना, जिन्दगी, मनोरथ और अकीदों को बहुत नजदीक से देखा है। वह अपने आप को समूची कायनात का वारिस, मनुष्यता का पुजारी, गरीबों का हमदर्द और गुरू घर का झाडू-बरदार समझते थे। उन्होंने अपनी सारी जिन्दगी लोक-भलाई के कार्यों में चिन्तित होकर काटी। वह चाहते थे कि पिंगलवाड़ा का नाम रेडक्रास की तरह प्रेरणा बनकर राष्ट्रीय तथा अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर फैले और सिख सभ्याचार का नाम रोशन करे। अन्त में मैं बार-बार उस युग पुरुष का सजदा करता हूं जिसने अपनी सारी जिन्दगी परोपकारी कार्यों के लिए समर्पित करके मनुष्यता को एक नया मार्ग-दर्शन करके मुझे ही नहीं समाज के प्रत्येक वर्ग को जीवन जांच के सही अर्थ दिये।

आल इण्डिया पिंगलवाड़ा चैरीटेबल सोसायटी (रजि.)
तहसीलपुरा, जी.टी.रोड, अमृतसर-143001.
पिंगलवाड़ा की प्राप्तियां

पिंगलवाड़ा संस्था समाज की ओर से दुत्तकारे/तृष्कारे अपंग, लूले-लंगड़े, अपाहिजों, अनाथों और लावारिसों का घर है। पिंगलवाड़ा संस्था की नींव सन् 1934 में उस समय रखी गई, जब अपाहिज बच्चे प्यारा सिंह की देख-भाल भगत पूर्ण सिंह जी को सौंपी गई। पर इस संस्था की स्थापना सन् 1947 में हुई जब देश के बँटवारे के बाद भगत जी ने लाहौर से अपने साथ लाए मरीजों की सेवा-सम्भाल पूरी तरह आरम्भ कर दी। उस समय भगत जी के पास मरीजों की सेवा के लिए न कोई सेवादार था, न रहने के लिए कोई उचित मकान था और न ही खाने-पीने अथवा दवाइयों के लिए किसी प्रकार की आर्थिक व्यवस्था ही थी। भगत जी अकेले ही सेवा के इस कठिन मार्ग पर चले थे लेकिन लोग मिलते गए और कारवाँ बनता गया। उनके पद् चिन्हों पर ही चलते हुए आज उनकी सुयोग्य उत्तराधिकारी डा. इन्द्रजीत कौर जी की मेहनत, लगन और अगवाई में पिंगलवाड़ा सोसाइटी के समर्पित सदस्य भगत जी के जन-कल्याणी कार्यों को देश-विदेश में फैलाने में लगे हैं ताकि आने वाली पीढ़ियाँ कह सकें कि हमारे पूर्वज हमारे लिए कुछ छोड़ कर गए हैं ।

पिंगलवाड़ा एक नजर
निवास और सम्भाल

1701 से अधिक निवासियों के लिए रहने का प्रबन्ध तथा बुजुर्गों के लिए अपना घर।

इलाज और सुविधाएं:-

दवाइयाँ, मेडिकल लबोरटरी, ऑप्रिशन थियेटर, भगत पूर्ण सिंह प्रारम्भिक कान सुनाई जाँच केन्द्र और पुनर्वास केन्द्र । कानों के Cochler Implant वास्ते स्पैशल ऑप्रिशन थियेटर, ऐम्ब्यूलैंसें तथा ट्रोमा वैन, दांतों का क्लीनिक, अल्ट्रासाउंड केन्द्र, मन्द बुद्धि बच्चों के लिए संवेदी केन्द्र, आंखों की जांच का केन्द्र, बनावटी अंग केन्द्र, फिजियोथैरेपी केन्द्र, अपना घर, तथा योग्य लड़के-लड़कियों की शादियां ।

वातावरण:-

* नर्सरी
* वृक्ष लगाना
* प्राकृतिक खेती
* जागरूकता मुहिम
* पानी शुद्धिकरण प्लांट

जागरूकता:-

- प्रिंटिंग प्रैस
- लाइब्रेरी
- किताबें एवं इश्तिहार
- सैमीनार एवं वर्कशाप
- विदेशीय यात्राएं

मुफ्त शैक्षिक सुविधाएँ:-

- भगत पूर्ण सिंह सी. सै. स्कूल, मानांवाला कम्पलैक्स, अमृतसर।
- भगत पूर्ण सिंह आदर्श स्कूल, बुटरकलां, (कादियां) गुरदासपुर ।
- भगत पूर्ण सिंह गूंगे-बहरे बच्चों का स्कूल, मानांवाला कम्पलैक्स, अमृतसर ।
- भगत पूर्ण सिंह स्कूल ऑफ स्पेशल एजूकेशन, मानांवाला कम्पलैक्स, अमृतसर ।
- भगत पूर्ण सिंह स्कूल ऑफ स्पैशल एजूकेशन, चण्डीगढ़।
- भगत पूर्ण सिंह सिलाई केन्द्र, मानांवाला कम्प.।

निवास और सम्भाल

पिंगलवाड़ा संस्था की 6 अलग-अलग ब्रांचों में 1705 से अधिक भिन्न-भिन्न बीमारियों से ग्रस्त रोगियों के रहने का कुशल प्रबन्ध है।

मानसिक रोगी	– 449	एड्स वाले	– 08
अधरंग पोलियो वाले	– 157	मिर्गी वाले	– 212
मन्द-बुद्धि वाले	– 306	कैंसर वाले	– 01
गूंगे-बहरे	– 137	शूगर वाले	– 60
वृद्ध (बुजुर्ग)	– 122	स्कूल जाने वाले बच्चे	– 100
जख्मों वाले	– 56	छोड़े गये बच्चे	– 12
टी. बी. वाले	– 21	ठीक हो चुके रोगी	– 36
नेत्रहीन	– 28	कुल मरीज	–1705

शाखाएं	रोगी
मुख्य शाखा अमृतसर (बच्चा वार्ड, माता महिताब कौर वार्ड, भाई प्यारा सिंह वार्ड)	– 377
मानांवाला कम्पलैक्स	– 782
पंडोरी वड़ेच शाखा	– 75
गोइंदवाला शाखा	– 101
जालंधर शाखा	– 31
संगरूर शाखा	– 232
पलसोर ब्रांच (चंडीगढ़)	– 107
कुल मरीज	-- 1705

इलाज और सुविधाएं:

(क) **डिस्पैन्सरी और लैबोरटरी की सुविधाएँ:-** रोगियों के इलाज के लिए पिंगलवाड़ा में मेडिकल लैबोरटरी और डिस्पैन्सरी की सुविधाएं प्राप्त हैं जिनका खर्च 90 लाख रुपये वार्षिक है।

(ख) **अल्ट्रा साउंड केन्द्र:-** पिंगलवाड़े में मरीजों तथा सेवादारों के रोगों की जांच के लिए सन् 2009 में अल्ट्रासाउंड केन्द्र की स्थापना की गई है।

(ग) **सहायक स्टाफ:-** मानसिक रोगियों और मरीजों की देख-भाल के लिए टैक्नीकल स्टाफ जैसे नर्सें, लैबोरटरी टैक्नीशियन तथा फॉरमासिस्ट की सेवाएं प्राप्त हैं।

(घ) **खून-दान कैम्प:-** दुर्घटनाग्रस्त जख्मियों की सहायता के लिए तथा संस्था के मरीजों के खून की कमी को पूरा करने के लिए प्रति वर्ष भगत जी की बरसी के अवसर पर खून-दान कैम्प लगाया जाता है। इस साल सन् 2013 में भी 225 यूनिट के करीब खून-दान के रूप में प्राप्त हुआ है।

ङ) **ऐम्ब्यूलैंसें तथा ट्रोमा वैन:-** प्राथमिक डाक्टरी सुविधाओं के साथ लैस ऐम्ब्यूलैंस जी. टी. रोड पर घटित सड़क दुर्घटनाओं के पीड़ितों की सहायता के लिए हमेशा तत्पर रहती है। संस्था की ऐम्ब्यूलैंसें रोगियों को अस्पताल ले जाने की सुविधाएं देती हैं।

च) **बनावटी अंग केन्द्र:-** जरूरतमन्द अंगहीनों के लिए भगत पूर्ण सिंह जी की याद को समर्पित एक कृत्रिम अंग केन्द्र मानांवाला कम्पलैक्स में स्थापित किया गया है जहां अंगहीनों को कृत्रिम अंग मुफ्त लगाए जाते हैं। नवम्बर 2003 से अब तक 3475 अंगहीनों को कृत्रिम अंग लगाए गए हैं।

(छ) **भगत पूर्ण सिंह प्रारंभिक बहरापन जांच केन्द्र:-** नवजात और गूंगे-बहरे बच्चों के कानों का प्रारम्भिक बहरापन जांच क्लीनिक केन्द्र मानांवाला कम्पलैक्स में स्थापित किया गया है जिसमें Bera Test भी बिना किसी फीस के किया जाता है।

(ज) **स्पैशल ऑप्रेशन थियेटर:-** मानांवाला कम्पलैक्स में एक अति आधुनिक ऑप्रेशन थियेटर स्थापित किया गया है, जिसमें हड्डियों, जनरल एवं कानों की सर्जरी का समुचित प्रबन्ध है।

(झ) **दांतों का क्लीनिक:**- मरीजों के दांतों की सम्भाल और इलाज के लिए दांतों का क्लीनिक भी स्थापित किया गया है ।

(ञ) **फिजिओथैरेपी केन्द्र:**- सन् 2005 से मानांवाला कम्पलैक्स में फिजिओथैरेपी केन्द्र स्थापित किया गया है जिसमें आधुनिक उपकरणों से पिंगलवाड़े के मरीज और गरीब जरूरतमन्द मुफ्त लाभ ले रहें हैं । सितम्बर 2012 तक 3742 मरीज लाभ ले चुके हैं और प्रत्येक दिन तकरीबन 80 मरीजों का इलाज किया जाता है ।

पर्यावरण जागरूकता:

(क) **वृक्षारोपण उत्सव:**- मानव तथा प्रकृति के सम्बन्ध में सन्तुलन बनाए रखने के लिए भगत जी काफी चिन्तित रहा करते थे जिसे आज पूरे विश्व समुदाय से मान्यता मिली है कि वृक्ष तथा जंगल समाज तथा विश्व के लिए जिन्दगी और मौत का सवाल है । पिंगलवाड़ा संस्था वातावरण को स्वच्छ बनाने और रेगिस्तान बन रही धरती के भू-क्षरण को रोकने के लिए भगत जी की बरसी पर हर साल स्कूलों, कालेजों, श्मशान-घाटों तथा अन्य सार्वजनिक जगहों पर वृक्ष लगाने की मुहिम शुरू करती है। सन् 2011 में पिंगलवाड़ा की अपनी नर्सरी में पौधे तैयार करवाकर 60,000 के करीब पौधें अलग-अलग कालेजों, स्कूलों, अस्पतालों और संस्थाओं में बांटे गये । जिनमें अमलतास, कचनार, बहेड़ा, जामुन, कदम, गुलमोहर, नीम, चकरेसीया, कनेर, पीपल, चम्पा, अर्जुन, सुखचैन चाँदनी, जैडरोपा आदि कुल 54 किस्म के पौधे तैयार किये गए हैं ।

(ख) साल 2010 में भगत जी की बरसी पर एक प्रसिद्ध कैंसर माहिर डॉ. गोपाल काबरा का "कीटनाशकों का रिपरोडकटिव प्रणाली पर दुष्प्रभाव" बारे भाषण आयोजित किया गया । इस मौके पर वातावरण और कुदरती खेती के जानकार प्रसिद्ध विद्वानों ने हिस्सा लिया ।

(ग) 16 से 18 जून 2010 को पिंगलवाड़ा की मानांवाला कम्पलैक्स में कुदरती खेती पर 3 दिन कार्यशाला चलाई गई जिसमें कुदरती खेती के माहिर श्री सुभाष पालेकर ने 'जीरो बजट खेती' पर विस्तार सहित जानकारी दी। इस कार्यशाला में पंजाब, हरियाणा, हिमाचल, जम्मू-कश्मीर और नेपाल से कुदरती खेती के माहिरों ने हिस्सा लिया।

नि:शुल्क शैक्षिक सुविधाएं:

गरीब बच्चों को शिक्षित करने के लिए पिंगलवाड़ा संस्था ने भगत पूर्ण सिंह जी की याद को समर्पित भिन्न-भिन्न पाठशालाएं चलाई हुई हैं।

(क) **भगत पूर्ण सिंह सी. सै. स्कूल, मानांवाला:-** यहाँ गरीब और झुग्गी-झोपड़ी वाले 682 बच्चों को शिक्षा, स्टेशनरी, स्कूल की वर्दी आदि मुफ्त दी जाती है । संस्था की यह सुहृदय सोच है कि ये बच्चे स्वयं को हीन न समझें और अपने पैरों पर खड़े होकर सभ्य समाज में एक अच्छा नागरिक बनकर विचरण कर सकें । इन बच्चों में 130 बच्चे पिंगलवाड़ा द्वारा पोषित हैं ।

(ख) **भगत पूर्ण सिंह आदर्श स्कूल, बूटर-कलां (कादियाँ) गुरदासपुर:-** यहाँ पर भी योग्य तथा अनुभवी अध्यापकों की छत्र-छाया में लगभग 360 बच्चे मुफ्त विद्या प्राप्त कर रहे हैं ।

(ग) **स्पैशल शिक्षा:-** पिंगलवाड़ा के 140 मन्द-बुद्धि बच्चों को अपने पांव पर खड़ा करने हित मानांवाला कम्पलैक्स में 'भगत पूर्ण सिंह स्कूल ऑफ स्पैशल एजूकेशन' की स्थापना की गई है ।

(घ) **गूंगे-बहरे बच्चों की शिक्षा:-** भगत पूर्ण सिंह गूंगे-बहरे बच्चों का स्कूल मानांवाला कम्पलैक्स में मई, 2005 से चल रहा है, जिसमें 103 बच्चे आधुनिक उपकरणों के द्वारा शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं ।

(ङ) **दस्तकारी शिक्षा:-** बच्चों के सुनहरे भविष्य के लिए उनकी पढ़ाई के साथ-साथ दस्तकारी शिक्षा जैसे सिलाई, कढ़ाई, मोमबत्ती बनाना, कुर्सी बुनना आदि की शिक्षा योग्य अध्यापकों द्वारा दी जा रही है । इसके अतिरिक्त बच्चों को संगीत शिक्षा भी दी जा रही है ।

(च) **भगत पूर्ण सिंह सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र:-** पिंगलवाड़ा की ओर से पिंगलवाड़ा की लड़कियों और मानांवाला के आस-पास के गांवों की गरीब लड़कियों के लिए सिलाई, कढ़ाई की सिखलाई देने हेतु इस केन्द्र की स्थापना की गई है। यह सिखलाई 6 महीने के लिए होती है ।

(छ) **कम्प्यूटर शिक्षा:-** सूचना एवं टैक्नोलॉजी के विस्तार को देखते हुए स्कूल के बच्चों को आधुनिक समाज का अंग बनाने के लिए संस्था की ओर से कम्प्यूटर शिक्षा का विशेष प्रबन्ध किया गया है ।

(ज) **होस्टल का प्रबन्ध:-** पिंगलवाड़ा मानांवाला कम्पलैक्स में पढ़ने वाले लगभग 185 लड़के-लड़कियों के लिए पृथक-पृथक होस्टल का प्रबन्ध किया गया है । पिंगलवाड़ा की संगरूर शाखा के होस्टल में रह रहीं 13 लड़कियां भी भिन्न-भिन्न पाठशालाओं में शिक्षा प्राप्त कर रही हैं । पिंगलवाड़ा में पली एक लड़की गुरु नानक देव यूनिवर्सिटी अमृतसर से आर्किटैक्चर की डिग्री प्राप्त करके अब इंजीनियरिंग कालेज में लैक्चरर है । एक लड़की पंजाबी यूनिर्विसटी पटियाला से फिजिक्ल एजूकेशन में पोस्ट ग्रेजूऐशन करके भगत पूर्ण सिंह सीनियर सैकण्डरी स्कूल मानांवाला में लेक्चरर है और एक लड़की नर्सिंग का कोर्स कर रही है ।

(झ) **विवाह:-** शिक्षा के साथ-साथ पिंगलवाड़ा में पोषित हुई नवयुवतियों की सुशील और योग्य वर ढूंढ़ कर उन्हें गृहस्थ जीवन के बंधनों में बांध दिया जाता है । संस्था 27 लड़कियों और 4 लड़कों को गृहस्थ जीवन का आशीर्वाद दे चुकी है ।

<u>समाज-कल्याण सम्बन्धी कार्य:</u>

पिंगलवाड़ा संस्था समाज-भलाई तथा सुधार कार्यों में भी विशेष रुचि लेती है ।

(क) **जन-जागृति:-** सामाजिक बुराइयों के प्रति लोगों को जागरूक करने के लिए पिंगलवाड़ा संस्था का खास योगदान रहा है । पिंगलवाड़ा मानांवाला कम्पलैक्स की 'पूर्ण प्रिंटिंग प्रैस' में हर तरह के धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक, सभ्याचारक एवं स्वास्थ्य-सम्बन्धी जन-चेतना विषयों पर साहित्य छाप कर जन-साधारण में कई वर्षों से मुफ्त बांट रही है । पिंगलवाड़े की पूर्ण प्रिंटिंग प्रैस का और पब्लिसिटी का सलाना खर्च 1 करोड़ 50 लाख रुपये है ।

(ख) **प्राकृतिक आपदाओं से पीड़ित लोगों की सहायता:-** प्राकृतिक जैसे बाढ़, भूकम्प तथा चक्रवात् से प्रभावित लोगों की पिंगलवाड़ा संस्था समय समय पर हर सम्भव सहायता करती

आ रही है । सन् 2008 में जुलाई तथा अगस्त में पंजाब के जालंधर तथा कपूरथला जिलों में आई बाढ़ से प्रभावित 800 परिवारों को राशन, घरेलू सामान और कम्बल बांटे गये । अगस्त 2010 में बादल फटने से लेह में आई भीषण बाढ़ से प्रभावित लेह पीड़ितों के लिए पिंगलवाड़ा की ओर से दो ट्रक राहत सामग्री–राशन, कम्बल एवं ऊनी कपड़े लेह एवं इसके दूर-दुर्गम इलाकों में पिंगलवाड़ा की ओर से बांटे गए ।

(ग) **ट्राई साइकिल का उपहार:-** भगत पूर्ण सिंह जी की 16वीं बरसी साल 2008 के अवसर पर स्कूलों में पढ़ने वाले पोलियोग्रस्त विद्यार्थियों और जरूरतमन्द व्यक्तियों को 25 ट्राई साइकिलें बांटी गई ।

(घ) **लावारिस लाशों का दाह-संस्कार:-** पिंगलवाड़ा की तरफ से लावारिस लाशों का अन्तिम संस्कार पूरे सत्कार सहित किया जाता है । सन् 2013 में अगस्त महीने तक 86 लावारिस लाशों का संस्कार किया गया ।

(ङ) **वृद्धों की देख-भाल:-** पिंगलवाड़ा की संगरूर शाखा में एक वृद्ध-घर मार्च 2002 से चल रहा है और एक वृद्ध घर मानांवाला कम्पलैक्स में निर्माण हो गया है जिसमें 92 वृद्ध रखने का विशेष प्रबन्ध किया गया है ।

अजायब घर तथा दस्तावेजी फिल्में:- कठिन मार्ग का पथिक भगत पूर्ण सिंह जी की जीवनी पर आधारित तस्वीरों का एक संग्रह अजायब घर के रुप में मुख्य पिंगलवाड़ा अमृतसर में स्थापित किया गया है । भगत जी की जीवन सम्बन्धी वीडियो फिल्में 'एक मिसाल', 'Pingalwara Presentation' तथा 'यह जन्म तुम्हारे लेखे' आदि पृथक-पृथक बुद्धिजीवियों द्वारा तैयार करवाई गई हैं । फिल्म 'Pingalwara Presentation' बारसीलोना (स्पेन) में 'The Parliament of the World's Religions' विचार-गोष्ठी में 13 जुलाई, 2004 को दिखाई गई ताकि पूरे विश्व में भगत जी का सन्देश पहुँच सके । पिंगलवाड़ा संस्था द्वारा पिंगलवाड़ा एवं पिंगलवाड़ा के स्कूलों में होने वाले सभ्याचारक प्रोग्रामों के बारे में कई दस्तावेजी फिल्में बुद्धिजीवियों से तैयार करवाई गई हैं ताकि

संगतों को पिंगलवाड़े की गतिविधियों के बारे में पूर्ण जानकारी दी जाती रहे और पिंगलवाड़े की छवि को उजागर किया जाता रहे।

भगत जी की जीवनी पर आधारित एक दस्तावेजी फिल्म 'A Selfless Life' कैनेडा निवासी जोगिन्दर सिंह कलसी तथा जसबीर सिंह हंसपाल द्वारा निर्मित फरवरी, 2009 को रिलीज की गई है।

भगत जी की जीवनी पर आधारित एक फीचर फिल्म 'यह जन्म तुम्हारे लेखे' बनाई जा रही है।

भगत पूर्ण सिंह स्मारक:

भगत पूर्ण सिंह जी के जन्म स्थान गांव राजेवाल रोहणों जिला लुधियाना में 'भगत पूर्ण सिंह स्मारक' का निर्माण हो चुका है। यह स्मारक उनकी पहली जन्म शताब्दी को समर्पित है जो 4 जून, 2004 को मनाई गई थी।

गऊशाला:- मानांवाला कम्पलैक्स में एक गऊशाला भी है जिसमें कुल 180 पशु हैं। गऊओं का दूध मरीजों को दिया जाता है।

निर्माणाधीन योजनाएं:- सन् 2010 में मानांवाला कम्पलैक्स में टी. बी. वार्ड, गूंगे-बहरे बच्चों के लिए स्कूल की आधुनिक इमारत एवं अति आधुनिक ऑप्रेशन थियेटर का निर्माण किया गया है। इसके अतिरिक्त पंडोरी बड़ैच ब्रांच में रोगियों के लिए नया ब्लाक, मुख्य दफ्तर के लिए प्रशासकीय ब्लाक का निर्माण हो चुका है। पिंगलवाड़ा मानांवाला कम्पलैक्स में मन्द-बुद्धि बच्चों के स्कूल की तीन मंजिली इमारत निर्माणाधीन है। पिंगलवाड़ा का प्रति-दिन का खर्च 4 लाख रुपये है जो कि संगतों के सहयोग और भगत जी के द्वारा स्थापित दिशा-निर्देश मुताविक होता है।

वाहिगुरू जी का खालसा।।
वाहिगुरू जी का फतेह।।

डॉ. इन्द्रजीत कौर,
प्रधान,
आल इण्डिया पिंगलवाड़ा चैरीटेबल सोसायटी (रजि.)
तहसीलपुरा, जी. टी. रोड, अमृतसर।

पिंगलवाड़ा की शाखाओं का संक्षिप्त सार

पिंगलवाड़ा संस्था अमृतसर सन् 1947 से बीमारों, अपाहिजों, लावारिस रोगियों, पागल बच्चों, मर्दों, स्त्रियों और अंगहीनों की सेवा-सम्भाल दानी सज्जनों के सहयोग और गुरू घर के आशीर्वाद से निरन्तर करती आ रही है।

1. पिंगलवाड़ा का मुख्य दफ्तर: जी. टी. रोड, नजदीक बस स्टैण्ड अमृतसर में स्थित है । फोन नं. 91-183-2584586, 2584713.
   मुख्य प्रशासक: कर्नल दर्शन सिंह बावा, (M) 98145-35937.
2. पंडोरी वड़ैच (मजीठा रोड): अमृतसर से 8 किलोमीटर दूर ।
   इंचार्ज: स. बलविन्दर सिंह,
   टेलीफोन नं. 0183-2573564, (M) 97814-01164.
3. मानांवाला कम्पलैक्स: यह कम्पलैक्स अमृतसर से 8 किलोमीटर दूर जालंधर-अमृतसर जी. टी. रोड पर स्थित है।
   फोन नं. 91-183-2100673.
   प्रशासक स.जय सिंह, (M) 97814-01142.
4. श्री गोइंदवाल शाखा: तरन तारन रोड, नजदीक गुरुद्वारा बाउली साहिब, गोइंदवाल । टेलीफोन नं. 01859-222798.
   इंचार्ज: बीबी बलजिन्दरजीत कौर, (M) 97814-01170.
5. संगरूर शाखा: धूरी रोड, संगरूर से 3 किलोमीटर दूरी पर स्थित है।
   टेलीफोन नं. 01672-221118 फैक्स नं. 01672-221118.
   ऑनरेरी प्रशासक: स. तरलोचन सिंह चीमा,
   मैंबर पिंगलवाड़ा सोसाइटी । (M) 97814-01144.
   इंचार्ज: स. हरजीत सिंह अरोड़ा, (M) 97814-01167.
6. जालन्धर शाखा: मकदूमपुरा, धोबी मुहल्ला, जालन्धर ।
   टेलीफोन नं. 0181-2238947.
   इंचार्ज: स. संगत सिंह, (M) 97814-01165.
7. चंडीगढ़ शाखा: गांव पलसौरा, चंडीगढ़,
   फोन नं. 0172-2697625 फैक्स नं. 0172-5090356.
   ऑनरेरी प्रशासक: श्री प्रकाश चन्द जैन, मैम्बर पिंगलवाड़ा सोसाइटी, टेलीफोन नं. (R) 0172-2591547, (M) 97811-30168.
   ऑनरेरी इंचार्ज : बीबी कुलजीत कौर, (M) 98140-79438.
8. लुधियाना दफ्तर पिंगलवाड़ा: 84, साउथ माडल ग्राम, लुधियाना।
   टेलीफोन नं. 0161-2429309, (M) 97814-01166.

अपील

सेवक कउ सेवा बनि आई ।।
हुकमु बूझि परम पदु पाई ।।

गुरुद्वारा डेहरा साहिब लाहौर के रूहानी वातावरण में और गुरबाणी की शिक्षाओं पर चलते हुए भगत पूर्ण सिंह जी ने जो निष्काम सेवा का कार्य लाहौर में प्रारम्भ किया था, उस कार्य को उन्होंने अमृतसर पहुँच कर मूल स्वरूप दिया। देश के विभाजन के बाद 18 अगस्त, 1947 को खालसा कालेज अमृतसर के रिफ्यूजी कैंप में पहुँच कर भगत जी ने दीन-दुखियों की सेवा बड़ी लग्न से आरम्भ कर दी जो कि उस समय हैजे के कारण एक अति जरूरी कार्य बन गया था। इसके बाद उन्होंने पीछे मुड़कर नहीं देखा। पिंगलवाड़ा को मूल रूप देने के लिए इसके संस्थापक भगत पूर्ण सिंह जी को दिन-रात सख्त मेहनत करनी पड़ी।

पिंगलवाड़ा में इस समय 1701 लावारिस रोगी हैं जिनकी धर्म, जाति, वर्ग या रंग भेद के बिना सेवा-सम्भाल की जाती है। इनमें लाचार अपाहिज, बीमार तथा पागल औरतें, मर्द, बच्चे और बूढ़े शामिल हैं। इनमें से कुछ भयानक असाध्य रोगों से ग्रस्त भी शामिल हैं। इसके अतिरिक्त जन-चेतना के लिए बहुत-सा साहित्य पूर्ण प्रिंटिंग प्रैस में छापकर मुफ्त वितरण किया जाता है। गरीब बच्चों को मुफ्त विद्या, अपाहिजों को मुफ्त बनावटी अंग और वातावरण की सम्भाल और शुद्धता के लिए सरकारी तथा गैर-सरकारी जगहों में मुफ्त वृक्ष लगाए जाते हैं।

पिंगलवाड़े का प्रतिदिन का खर्च लगभग चार लाख रुपये है जो दानी सज्जनों और पिंगलवाड़े के शुभ-चिन्तकों द्वारा दिए दान और सहायता से चलता है। दानी सज्जनों से विनम्र बिनती है कि वे संस्था को मनीआर्डर, बैंक ड्राफ्ट और चैक द्वारा दान भेजने की कृपालता करें ताकि इस शुभ कार्य को जारी रखा जा सके।

निवेदिका:
डॉ. इन्द्रजीत कौर,
मुख्य सेवादार,
आल इण्डिया पिंगलवाड़ा चैरीटेबल सोसाइटी (रजि.) अमृतसर।